www.deshkiupasana.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - UPHIN/2022/86937

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE

सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 04 | अंक – 135 | जौनपुर मंगलवार, 30 दिसम्बर 2025 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

2026 में जवाबदेही की दिशा तय करेगा दिल्ली विधानसभा का शीतकालीन सत्र : विजेंद्र गुप्ता

नई दिल्ली, (एजेंसी)। जब दिल्ली विधानसभा का शीतकालीन सत्र जनवरी के आरंभ में शुरू होगा, तब यह ऐसे समय में हो रहा होगा जब शासन और प्रशासन से जवाबदेही की अपेक्षाएं पहले से कहीं अधिक प्रबल हैं। वर्ष 2026 का यह पहला विधान सत्र केवल एक औपचारिक कैलेंडर प्रक्रिया न होकर, प्रशासनिक कार्यप्रणाली और प्रदर्शन की समीक्षा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव माना जा रहा है। दिल्ली विधानसभा सचिवालय की तरफ से जारी प्रेस नोट में कहा गया कि विधानसभा सत्र के रूप में इस शीतकालीन सत्र का विशेष महत्व है। विकास कार्यों की प्रगति, प्रशासनिक दक्षता, और वित्तीय अनुशासन जैसे विषयों के केंद्र में रहने की संभावना है। सीमित अवधि और बढ़ती जन अपेक्षाओं के बीच यह सत्र विस्तृत बहसों की बजाय केंद्रित विधायी समीक्षा के रूप में सामने आने की संभावना है। शीतकालीन सत्र की औपचारिक शुरुआत 5 जनवरी 2026 को सुबह 11 बजे दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना के अभिभाषण से होगी, जिसके बाद सदन की नियमित कार्यवाही शुरू होगी। यह सत्र 8 जनवरी 2026 तक चलेगा। उद्घाटन दिवस पर कार्यवाही सुबह शुरू होगी, जबकि शेष दिनों में बैठकें दोपहर 2रू00 बजे से शुरू होंगी। दिल्ली विधानसभा के अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता ने शीतकालीन सत्र के दौरान रचनात्मक सहभागिता के महत्व पर बल देते हुए ।

महात्मा गांधी की सोच को खत्म करना चाहती है सरकार : राजेश राम

पटना, (एजेंसी)। बिहार की राजधानी पटना में कांग्रेस पार्टी ने रविवार को मनरेगा का नाम बदले जाने के खिलाफ विरोध दर्ज कराया। एक मार्च में बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल हुए। कहा गया कि केंद्र सरकार मनरेगा खत्म कर महात्मा गांधी की सोच को खत्म करना चाहती है। बिहार कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम ने एक्स पोस्ट में लिखा कि कांग्रेस स्थापना दिवस पर प्रदेश कांग्रेस परिवार ने गांधी के विचारों को आत्मसात करते हुए मनरेगा की रक्षा और मजदूरों के अधिकारों की मजबूती का संकल्प लिया। सत्य, संघर्ष और सामाजिक न्याय के रास्ते पर चलकर ही मजबूत भारत का निर्माण होगा।पटना में आईएएनएस से बातचीत में राजेश राम ने कहा कि मनरेगा के पीछे की सोच को खत्म करके इसे बर्बाद करने की साजिश रची गई है। केंद्र सरकार ने जिस तरह से इसे कमजोर किया है, उसके पीछे सिर्फ एक ही वजह है कि सरकार गरीबों के खिलाफ है। केंद्र सरकार महात्मा गांधी की सोच को खत्म करना चाहती है। यह दुर्भावना से प्रेरित हो गई है क्योंकि मनरेगा तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में शुरू किया गया था, और इसका नाम महात्मा गांधी के नाम पर रखा गया था।

उत्तर प्रदेश की कानून-व्यवस्था का मॉडल दूसरे राज्यों के लिये उदाहरण : आदित्यनाथ

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अपने प्रदेश के कानून–व्यवस्था के मॉडल को दूसरे राज्यों के लिए एक उदाहरण के तौर पर पेश किये जाने का दावा करते हुए रविवार को कहा कि सुरक्षा की भावना ने निवेश और मूलभूत ढांचे के विकास को बढ़ावा दिया है। मुख्यमंत्री ने यहां पुलिस मुख्यालय में दो दिवसीय पुलिस मंथन सम्मेलन के समापन दिवस पर अपने संबोधन में कहा, ''हमने उत्तर प्रदेश में दिखाया है कि क्या हासिल किया जा सकता है। आज दूसरे राज्यों के लोग इसे एक मॉडल के तौर पर पेश करने की कोशिश कर रहे हैं। वहां का मीडिया कहता है कि उनके राज्य में उत्तर प्रदेश मॉडल आ गया है।'' आदित्यनाथ ने इस बदलाव का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के विजन से प्रेरित 'स्मार्ट पुलिसिंग' को दिया और कहा कि सम्मेलन के दौरान तैयार की गयी रूपरेखा एक महत्वपूर्ण नीति दस्तावेज होगी। उन्होंने एक्सप्रेसवे, हवाई कनेक्टिविटी और रेल नेटवर्क का हवाला देते हुए कहा कि अगर सुरक्षा नहीं होती तो मूलभूत ढांचा इतनी तेजी से विकसित नहीं होता। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में उत्तर प्रदेश के बारे में लोगों की सोच बदली है। उन्होंने कहा, ''आज लोग मानते हैं कि उत्तर प्रदेश में बदलाव आया है। निवेश इसलिए हो रहा है क्योंकि सुरक्षा है और कानून का राज है।'' आदित्यनाथ ने संवाद–आधारित, जन–केंद्रित पुलिसिंग पर भी जोर दिया और कहा, ''खुफिया जानकारी हमारा सबसे बड़ा हथियार है।'' उन्होंने कहा कि कानून का राज उत्तर प्रदेश की सबसे बड़ी ताकत है। जिसने सार्वजनिक असुरक्षा को दूर किया है, विश्वास बनाया है और लोकतंत्र को मजबूत किया है, जिससे राज्य निवेश के लिए एक स्वप्निल गंतव्य बन गया है।

भारतीय नौसेना किसी भी खतरे का सामना करने के लिए तैयार : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारत की राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पश्चिमी तट पर पनडुब्बी आईएनएस वाघशीर पर सवार होकर समुद्री भ्रमण किया। नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी भी राष्ट्रपति के साथ थे। उन्होंने रविवार को कर्नाटक के कारवार नौसेना बंदरगाह पर पनडुब्बी पर सवार होकर समुद्री भ्रमण किया। दो घंटे से अधिक के इस भ्रमण के दौरान उन्होंने पनडुब्बी के चालक दल से बातचीत की और ऑपरेशनल प्रदर्शन देखे। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के बाद पनडुब्बी में यात्रा करने वाली दूसरी राष्ट्रपति हैं। राष्ट्रपति भवन के अनुसार स्वदेशी कालवरी श्रेणी की पनडुब्बी पर यह पहली यात्रा सैन्य परिचालन स्थितियों में सशस्त्र बलों के साथ सर्वोच्च कमांडर की निरंतर सहभागिता को दर्शाती है। इससे पहले नवंबर 2024 में राष्ट्रपति ने स्वदेशी विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रांत पर भारतीय नौसेना द्वारा किए गए एक परिचालन प्रदर्शन को देखा था।

राष्ट्रपति ने आगंतुक पुस्तिका में एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखकर अपनी भावनाओं को व्यक्त किया, जिसमें उन्होंने कहा कि आईएनएस वाघशीर पर हमारे नाविकों और अधिकारियों के साथ नौकायन, गोताखोरी और समय बिताना मेरे लिए वास्तव में एक बहुत ही खास अनुभव था। उन्होंने कहा कि आईएनएस वाघशीर द्वारा किए गए कई सफल परीक्षण और चुनौतीपूर्ण अभियान चालक दल की असाधारण तत्परता और समर्पण को दर्शाते हैं, जो इसके आदर्श वाक्य श्वीरतापूर्ण विजयश के अनुरूप है। उन्होंने कहा कि वाघशीर के चालक दल के अनुशासन, आत्मविश्वास और उत्साह को देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि हमारी पनडुब्बियां और भारतीय नौसेना किसी भी खतरे और हर परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं।

तीन दिवसीय दौरे पर पश्चिम बंगाल आ सकते हैं अमित शाह

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के सोमवार को पश्चिम बंगाल के तीन दिवसीय दौरे पर यहां पहुंचने की संभावना है। भारतीय जनता पार्टी के एक वरिष्ठ नेता ने यह जानकारी दी। नेता ने बताया कि शाह शाम को कोलकाता हवाई अड्डे पर उतरेंगे और वहां से सीधे भाजपा कार्यालय जाएंगे और राज्य में अगले साल की शुरुआत में होने वाले विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी की संगठनात्मक तैयारियों का जायजा लेंगे। उन्होंने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्री के मंगलवार को शहर में एक संवाददाता सम्मेलन करने की भी उम्मीद है और अपने प्रवास के दौरान वह कार्यकर्ताओं के साथ बैठकें भी कर सकते हैं। भाजपा नेता ने बताया कि शाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पदाधिकारियों के साथ एक बंद कमरे में बैठक करेंगे। उन्होंने कहा कि इसके अलावा वह भाजपा के विधायकों, सांसदों और कोलकाता नगर निगम के पार्षदों के साथ भी अलग से बैठक करेंगे। भाजपा नेता के अनुसार, बुधवार को प्रस्थान करने से पहले शाह शहर या उसके आसपास के इलाकों में किसी बंगाली विभूति के आवास पर जा सकते हैं। हालांकि, उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम को अभी अंतिम रूप नहीं दिया गया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने मुख्य सचिवों की बैठक में भारत को आत्मनिर्भर बनाने पर दिया जोर

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को राजधानी नई दिल्ली में मुख्य सचिवों के राष्ट्रीय सम्मेलन की पांचवीं बैठक की। इस कार्यक्रम का मकसद केंद्र और राज्यों को देश की राष्ट्रीय ग्रोथ के लिए अपनी प्राथमिकताओं को एक साथ लाना है। प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर सम्मेलन की तस्वीरें साझा कीं। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि उन्होंने मुख्य सचिवों के सम्मेलन को संबोधित किया। इस वर्ष का विषय था विकसित भारत के लिए मानव पूंजी। उन्होंने कहा, मैंने इस बात पर अपने विचार साझा किए कि हम सब मिलकर भारत को

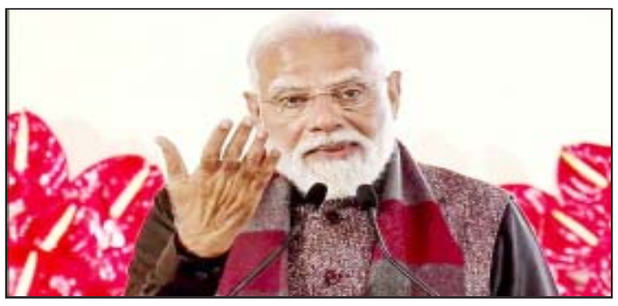

आत्मनिर्भर बनाने, गरीबों को सशक्त बनाने और विकसित भारत के अपने सपने को साकार करने के लिए कैसे काम कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि राज्यों से विनिर्माण को प्रोत्साहित करने, व्यापार करने में सुगमता बढ़ाने और सेवा क्षेत्र को मजबूत करने का आह्वान किया गया। आइए, भारत को वैश्विक सेवा क्षेत्र का महाशक्ति बनाने का लक्ष्य रखें। भारत में विश्व का खाद्य भंडार बनने की क्षमता है। हमें उच्च मूल्य वाली कृषि, बागवानी, पशुपालन, दुग्ध उत्पादन और मत्स्य पालन की ओर अग्रसर होना चाहिए। इसी तरह भारत एक प्रमुख खाद्य निर्यातक बन सकता है। इस कार्यक्रम का मकसद केंद्र और राज्यों को देश की राष्ट्रीय ग्रोथ के लिए अपनी प्राथमिकताओं को एक साथ लाना है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने ज्ञानवर्धक बातचीत की, जिसमें भारत के प्रशासनिक सिस्टम को बेहतर बनाने के लिए सुधार और परफॉर्मेंस के महत्व पर जोर दिया गया। पीएम मोदी ने कहा, दिल्ली में हो रहे मुख्य सचिवों के राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान गवर्नेंस और सुधारों से जुड़े अलग–अलग मुद्दों पर ज्ञानवर्धक चर्चा हुई।

दुनिया के कल्याण के लिए भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में काम करें हिंदू : मोहन भागवत

नई दिल्ली, (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के प्रमुख मोहन भागवत ने हिंदुओं से अपील की कि वे हिंदू समाज और दुनिया के कल्याण के लिए भारत को विश्व गुरु बनाने की दिशा में काम करें। अंतरराष्ट्रीय हिंदू संगठनों के एक सम्मेलन विश्व संघ शिविर के समापन समारोह में उन्होंने कहा कि हिंदुओं और स्वयंसेवकों को उदाहरण प्रस्तुत करके हुए यह दिखाना होगा कि मानव बुद्धि को वैश्विक कल्याण की दिशा में कैसे लगाया जा सकता है। उन्होंने कहा, "... प्रौद्योगिकी आगे बढ़ेगी। सोशल मीडिया बढ़ेगा। ए.आई. आएगा। सब कुछ आएगा। लेकिन, प्रौद्योगिकी

के दुष्प्रभाव नहीं होंगे। प्रौद्योगिकी मानवता की मालिक नहीं बनेगी। इंसान ही प्रौद्योगिकी का मालिक रहेगा।" उन्होंने यह भी कहा, ''मानव बुद्धि को तकनीक के माध्यम से विश्व कल्याण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए, न कि इसके विपरीत। यह कैसे संभव होगा? इसके लिए हमें स्वयं उदाहरण बनकर जीना होगा। यह संदेश पूरे भारतीय समाज के लिए है।'' भागवत ने कहा, "दुनिया के बाकी हिस्सों में लोग अधिकतम लोगों का भला भी नहीं कर सके" उन्होंनेकहा कि हिंदू समाज को ऐसी जीवनशैली अपनानी चाहिए, जिससे अन्य लोग उनसे सीख सकें। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदू समाज को धर्म स्थापित करने के लिए पूरी दुनिया में अपने आदर्शों को फैलाना होगा, लेकिन यह सैन्य या आर्थिक ताकत से दूसरों को दबाकर नहीं, बल्कि अपने उच्च जीवन–मूल्यों की सहायता से करना होगा। भागवत ने भारत को फिर से विश्वगुरु बनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि यह केवल हिंदू समाज की इच्छा नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया की जरूरत है। उन्होंने कहा, "दुनिया हमसे उम्मीदें लगाए हुए है। हमें विश्वगुरु बनना है, लेकिन यह साधारण काम नहीं है। इसके लिए कठिन परिश्रम की आवश्यकता है। यह परिश्रम विभिन्न जगह हो रहा है। संघ ऐसी एक जगह है।

उपद्रवी तत्वों को बख्शा नहीं जाएगा, नेपाल में तलाशी जारी : धामी

त्रिपुरा, (एजेंसी)। त्रिपुरा में दुख और गुस्से का माहौल था, जब उत्तराखंड के देहरादून जिले में बेरहमी से हमला किए जाने के बाद मारे गए एक युवा आदिवासी छात्र का शव राज्य में वापस लाया गया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने नस्लीय हमले में त्रिपुरा के छात्र की हत्या की निंदा करते हुए कहा कि सरकार इस मामले को बहुत गंभीरता से ले रही है और आरोपियों में से एक, जो अभी फरार है, उसे जल्द ही हिरासत में ले लिया जाएगा। त्रिपुरा के उनाकोटी जिले के नंदनगर के रहने वाले 24 साल के एमबीए फाइनल ईयर के छात्र एंजेल चकमा की देहरादून में एक नस्लीय हमले में चाकू लगने से मौत हो गई। 9 दिसंबर को एंजेल और उसके छोटे भाई माइकल को कुछ लोगों के एक ग्रुप ने रोका, जिन्होंने कथित तौर पर उन पर नस्लीय टिप्पणियां कीं, जिसके बाद एक स्थानीय बाजार में झगड़ा हुआ। उत्तराखंड पुलिस ने देहरादून

में पढ़ रहे त्रिपुरा के एक छात्र की हत्या में शामिल छठे आरोपी को पकड़ने के लिए अपनी टीम नेपाल भेजी है। पीड़ित की पहचान 24 साल के एंजेल चकमा के रूप में हुई है, जो त्रिपुरा के उनाकोटी जिले का रहने वाला था और अपने छोटे भाई माइकल के साथ देहरादून के एक प्राइवेट यूनिवर्सिटी में डठ। की पढ़ाई कर रहा था। छह आरोपियों में से पांच को पकड़ लिया गया है, लेकिन नेपाल के कंचनपुर जिले का रहने वाला यज्ञराज अवस्थी फरार है। पुलिस ने उसकी गिरफ्तारी पर 25,000 रुपये का इनाम घोषित किया है ।

भाजपा राज में नफरत सामान्य सिब्बल ने भी घेरा : राहुल गांधी

नई दिल्ली, (एजेंसी)। उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में त्रिपुरा के छात्र एंजेल चकमा की हत्या के मामले ने अब बड़ा राजनीतिक रूप ले लिया है। इस घटना को लेकर विपक्ष ने केंद्र सरकार और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर तीखा हमला बोला है। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने इसे श्नफरती अपराधश करार देते हुए सरकार की चुप्पी पर सवाल उठाए हैं। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने एंजेल चकमा की हत्या की कड़ी निंदा की है। उन्होंने सोमवार को भाजपा पर हमला बोलते हुए कहा कि सत्ताधारी पार्टी ने नफरत को सामान्य बना दिया है, जिसकी वजह से ऐसी घटनाएं हो रही हैं। इसको लेकर राहुल गांधी ने एक्स पर लिखा श्देहरादून में एंजेल चकमा और उनके भाई माइकल के साथ जो हुआ, वह एक भयानक नफरत का अपराध है। नफरत रातों–रात पैदा नहीं होती। वर्षों से इसे रोज बढ़ावा दिया जा रहा है। खासकर हमारे युवाओं को जहरीले कंटेंट और गैर–जिम्मेदार कहानियों के जरिए। और सत्ताधारी भाजपा के नफरत फैलाने वाले नेताओं द्वारा इसे नॉर्मल बनाया जा रहा है। भारत सम्मान और एकता पर बना है, डर और गाली– गलौज पर नहीं। हम प्यार और विविधता का देश हैं। हमें एक ऐसा मरा हुआ समाज नहीं बनना चाहिए जो अपने साथी भारतीयों को निशाना बनते हुए देखे और चुप रहे। हमें सोचना चाहिए और सामना करना चाहिए।

नई परिभाषा से अरावली का अस्तित्व खतरे में : जयराम रमेश

नई दिल्ली, (एजेंसी)। कांग्रेस ने सोमवार को केंद्र और राज्य की डबल इंजन सरकार पर अरावली पर्वत श्रृंखला को नुकसान पहुंचाने का गंभीर आरोप लगाया है। पार्टी का दावा है कि सरकार की नीतियों के कारण अरावली का अस्तित्व खतरे में है। कांग्रेस का कहना है कि सिर्फ खनन ही नहीं, बल्कि जिस तरह से रियल एस्टेट प्रोजेक्ट्स को बढ़ावा दिया जा रहा है, वह अरावली के पहले से तबाह हो चुके पारिस्थितिकी तंत्र में और तबाही मचाएगा। इसको लेकर कांग्रेस महासचिव और पूर्व पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट में लिखा श इस समय देश अरावली को लेकर सर्वोच्च न्यायालय के ताजा निर्देशों का इंतजार कर रहा है। यहां इस बात के और सबूत हैं कि अरावली की नई परिभाषा पहले से ही बर्बाद हो चुके इस पारिस्थितिकी तंत्र में और ज्यादा तबाही मचाएगी। मुद्दा सिर्फ खनन का नहीं है–फॉरेस्ट सर्वे ऑफ

इंडिया की सिफारिशों के खिलाफ, नई दिल्ली और जयपुर की डबल इंजन सरकार रियल एस्टेट डेवलपमेंट के दरवाजे भी खोल रही है। मामले में कांग्रेस ने अरावली की नई परिभाषा का विरोध किया। कांग्रेस का आरोप है कि इस नई परिभाषा के लागू होने से अरावली का 90 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा कानूनी सुरक्षा के दायरे से बाहर हो जाएगा। इसका सीधा मतलब यह होगा कि इन इलाकों को खनन और अन्य निर्माण कार्यों के लिए खोलकर उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा। हालांकि इस मुद्दे पर विवाद बढ़ने के बाद केंद्र सरकार ने राज्यों को निर्देश दिया था कि वे पर्वत श्रृंखला के अंदर नई खनन लीज न दें। वहीं, सर्वोच्च न्यायालय ने भी अरावली की परिभाषा को लेकर चल रहे विवाद पर खुद संज्ञान लिया है। इस मसले पर आज सर्वोच्च न्यायालय में सुनवाई हुई। सुनवाई के बाद न्यायालय ने पिछले फैसले पर रोक लगा दी है। इससे पहले 20 नवंबर को शीर्ष अदालत ने अरावली पहाड़ियों और श्रृंखलाओं की एक समान परिभाषा स्वीकार की थी। कोर्ट ने विशेषज्ञों की रिपोर्ट आने तक दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात में फैले अरावली क्षेत्र में नई खनन लीज देने पर रोक लगा दी थी।

संपादकीय

राम भरोसे जीने विवश हो जाएंगे

मनरेगा के जी राम जी में बदलने से निवेशकों और धनी इलाकों के किसानों को सस्ती दर पर मजदूर मिल सकेंगे। मनरेगा से इसमें बाधा आई थी और यह इन तबकों की इस कानून से आरंभ से ही एक बड़ी शिकायत थी। मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम) को वीबी– जी राम जी (विकसित भारत– गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन– ग्रामीण) में बदलने के नरेंद्र मोदी सरकार के इरादे में नागरिकों के प्रति उसके नजरिये की झलक देखी जा सकती है। मनरेगा उस दौर में बना, जब तत्कालीन यूपीए–1 सरकार ने विकास की अधिकार आधारित अवधारणा को अपनाया था। समझ यह थी कि गरिमामय जिंदगी की न्यूनतम शर्तों को वैधानिक अधिकार के रूप में मान्यता दी जाए और उन स्थितियों को हासिल करने की योजनाएं लागू की जाएं। इस रूप में उस दौर में बने कई कानून सामान्य कल्याण योजनाओं से अलग थे। इसीलिए मनरेगा को मांग केंद्रित बनाया गया– यानी प्रावधान किया गया कि ग्रामीण इलाकों में अकुशलकर्मी जब कभी मांग करेंगे, कम–से–कम 100 दिन उन्हें काम मुहैया करना सरकार के लिए अनिवार्य होगा। इस काम में पारिश्रमिक भुगतान का पूरा खर्च केंद्र उठाएगा, जबकि सामग्रियां आदि जुटाने का खर्च राज्य सरकार के खजाने से आएगा। अब ये सारे प्रावधान अब बदल जाएंगे। अब कुछ छोटे राज्यों को छोड़ कर बाकी हर राज्य की सरकार को पारिश्रमिक का 40 फीसदी हिस्सा भी अपने कोष से देना होगा। इसके अलावा योजना मांग केंद्रित नहीं रह जाएगी। जी राम जी बजट का उपयोग सरकार की प्राथमिकता से होगा। बोलचाल की आर्थिक भाषा में कहें, तो डिमांड साइड के बजाय सप्लाई साइड की योजना बन जाएगी। फिर यह सालों भर चलने वाली योजना नहीं रहेगी। कृषि सीजन में इसे रोक दिया जाएगा। तो कुल मिलाकर बदलाव सिर्फ नाम में नहीं, बल्कि अधिनियम के मूल ढांचे में है। नतीजा यह होगा कि आपातकाल में न्यूनतम रोजगार की आश्वस्ति प्रदान करने और मजदूरों का पलायन रोकने में मनरेगा का, भले ही न्यूनतम मगर जो महत्त्वपूर्ण योगदान बना, वह स्थिति अब नहीं रहेगी। इससे निवेशकों और कृषि सीजन में धनी इलाकों के किसानों को सस्ती दरों पर मजदूर मिल सकेंगे। मनरेगा से इसमें रुकावट आई थी और यह इन तबकों की इस कानून से आरंभ से एक बड़ी शिकायत थी। जबकि जिन गरीब मजदूरों का यह सहारा था, वे अब राम भरोसे जीने को अधिक विवश हो जाएंगे।

युद्ध, संघर्ष, सत्ता परिवर्तन, तख्तापलट और अस्थिरता से साल भर जूझती रही दुनिया

नीरज

साल 2025 वैश्विक राजनीति के इतिहास में एक ऐसे वर्ष के रूप में दर्ज हुआ, जिसने यह साफ कर दिया कि दुनिया अब स्थिरता की ओर नहीं, बल्कि अस्थिरता, टकराव और सत्ता संघर्ष की ओर तेजी से बढ़ रही है। यह साल लोकतंत्र और तानाशाही, शांति और युद्ध, संवाद और टकराव के बीच की रेखाओं को और धुंधला कर गया। कहीं चुनावों के जरिए सरकारें बदलीं, कहीं बंदूकों की नली

से सत्ता हथियाई गई, तो कहीं युद्ध और सीमित संघर्षों ने मानवता को एक बार फिर कठघरे में खड़ा कर दिया। 2025 की शुरुआत ही एक बड़े झटके के साथ हुई, जब डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में दोबारा कार्यभार संभाला। उनकी वापसी केवल अमेरिका तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसका असर पूरी दुनिया पर पड़ा। ट्रंप का दूसरा कार्यकाल पहले से कहीं अधिक आक्रामक, राष्ट्रवादी और टकरावपूर्ण नजर आया। उनकी नीतियों ने वैश्विक व्यापार, सुरक्षा गठबंधनों और कूटनीतिक संतुलन को झकझोर दिया। अमेरिका की विदेश नीति फिर से "अमेरिका फर्स्ट" की राह पर लौटती दिखी, जिससे यूरोप से लेकर एशिया तक सहयोगी देशों में असहजता बढ़ी। ट्रंप की शैली ने मित्र देशों को भी यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या अमेरिका अब भरोसेमंद साझेदार रह गया है। इसके अलावा, 2025 में कई देशों में नई सरकारों का गठन हुआ। कुछ देशों में यह सत्ता परिवर्तन लोकतांत्रिक प्रक्रिया का परिणाम था, तो कुछ जगहों पर राजनीतिक अस्थिरता की देन। अफ्रीका, यूरोप और प्रशांत क्षेत्र के कई छोटे–बड़े देशों में चुनावों के बाद नए नेतृत्व सामने आए। इन सत्ता परिवर्तनों ने यह दिखाया कि लोकतंत्र अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है, लेकिन यह भी उतना ही स्पष्ट हुआ कि लोकतांत्रिक संस्थाएं दबाव में हैं। कई देशों में कमजोर जनादेश, बिखरी संसद और अस्थिर गठबंधन सरकारों ने शासन को चुनौतीपूर्ण बना दिया। हम आपको बता दें कि जहाँ कुछ देशों ने चुनावों का रास्ता चुना, वहीं 2025 तख्तापलटों का भी गवाह बना। अफ्रीका के कुछ हिस्सों में सेना ने लोकतांत्रिक सरकारों को हटाकर सत्ता अपने हाथ में ले ली। सत्ता परिवर्तन की यह प्रवृत्ति खासतौर पर उन क्षेत्रों में दिखी, जहाँ पहले से ही राजनीतिक अस्थिरता, गरीबी और आतंकवाद मौजूद था। सेना द्वारा कई देशों में सत्ता पर कब्जा यह संकेत देता है कि कई देशों में लोकतंत्र अभी भी जड़ें नहीं जमा पाया है। अंतरराष्ट्रीय समुदाय की चेतावनियों और प्रतिबंधों के बावजूद तख्तापलटों का सिलसिला यह सवाल खड़ा करता है कि क्या वैश्विक व्यवस्था वास्तव में लोकतंत्र की रक्षा करने में सक्षम है? इसके अलावा, साल 2025 में दक्षिण एशिया की उथल–पुथल की कहानी में नेपाल एक अहम उदाहरण बनकर सामने आया, जहाँ सत्ता परिवर्तन की पटकथा किसी राजनीतिक दल ने नहीं, बल्कि जेन–जी आंदोलन ने लिखी। बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई और अवसरों की कमी से त्रस्त युवा पीढ़ी ने सड़कों पर उतरकर पारंपरिक राजनीति को सीधी चुनौती दी। सोशल मीडिया से शुरू हुआ यह आंदोलन देखते–ही–देखते जनआक्रोश में बदल गया, जिसने सरकार की नींव हिला दी। प्रदर्शन इतने व्यापक और उग्र हुए कि सत्ता प्रतिष्ठान को झुकना पड़ा और अंततः सरकार गिर गई। नेपाल का यह घटनाक्रम इस बात का संकेत बना कि अब सत्ता परिवर्तन केवल संसद या बंदूक से नहीं, बल्कि डिजिटल पीढ़ी की संगठित आवाज से भी संभव है। यह आंदोलन केवल सरकार विरोधी नहीं था, बल्कि दशकों से जमी हुई राजनीतिक जड़ता और वंशवादी राजनीति के खिलाफ खुला विद्रोह था, जिसने पूरे क्षेत्र को यह चेतावनी दी कि युवा पीढ़ी को नजरअंदाज करना अब सत्ता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका है। इसके अलावा, साल 2025 को यदि किसी एक शब्द में समेटा जाए तो वह शब्द है संघर्ष। यह वर्ष दुनिया के अलग–अलग हिस्सों में सुलगती सीमाओं, टूटते समझौतों और बढ़ते सैन्य टकरावों का गवाह बना। दक्षिण एशिया से लेकर मध्य–पूर्व और दक्षिण–पूर्व एशिया तक, शांति केवल कागजों में सिमट कर रह गई। भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य टकराव और तनाव पूरे साल बना रहा। पहलगाम आतंकवादी हमले के बाद शुरू हुए ऑपरेशन सिंदूर ने यह स्पष्ट कर दिया कि दोनों परमाणु संपन्न देशों के बीच कितनी नाजुक स्थिति है। वहीं पाकिस्तान और अफगानिस्तान के बीच सीमा संघर्ष ने क्षेत्रीय अस्थिरता को और गहरा किया, जहाँ आतंकवाद, शरणार्थी संकट और सैन्य झड़पें एक–दूसरे में घुलती रहीं। साथ ही दक्षिण–पूर्व एशिया में दुनिया ने एक अप्रत्याशित मोर्चा खुलते देखा, जब थाईलैंड और कंबोडिया के बीच सीमित युद्ध छिड़ गया। यह संघर्ष इस बात का संकेत था कि क्षेत्रीय विवाद, जो वर्षों से दबे हुए थे, अब खुलकर हिंसक रूप लेने लगे हैं। वहीं मध्य–पूर्व में इजराइल और हमास के बीच संघर्ष ने भयावह मानवीय संकट को जन्म दिया। गाजा पट्टी युद्धभूमि में तब्दील होती रही, जहाँ हवाई हमले, रॉकेट फायरिंग और जमीनी कार्रवाई ने हजारों निर्दोष लोगों की जान ली। यह संघर्ष केवल क्षेत्रीय नहीं रहा, बल्कि वैश्विक राजनीति और कूटनीति को भी गहरे स्तर पर प्रभावित करता रहा। इसके अलावा, मध्य–पूर्व में तनाव और गहरा हुआ। ईरान और इजराइल के बीच प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष संघर्ष ने पूरे क्षेत्र को युद्ध के मुहाने पर ला खड़ा किया। मिसाइल हमले, हवाई हमले और सैन्य चेतावनियों ने यह साफ कर दिया कि एक चिंगारी पूरे क्षेत्र को आग में झोंक सकती है। इसके अलावा, यूक्रेन और रूस के बीच जारी युद्ध 2025 में भी थमता नजर नहीं आया। यह संघर्ष केवल दो देशों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यूरोप की सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका सीधा असर पड़ा। साथ ही अफ्रीका के सैहेल क्षेत्र में चरमपंथी हिंसा और गृहयुद्ध जैसी स्थितियां बनी रहीं, जहाँ आम नागरिक सबसे बड़े शिकार बने। इसी तरह बांग्लादेश में आंतरिक राजनीतिक संघर्ष और हिंसा ने यह दिखा दिया कि लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर पनपने वाले टकराव भी किस तरह देश को अस्थिर कर सकते हैं। विरोध–प्रदर्शन, राजनीतिक टकराव और अल्पसंख्यकों के साथ बर्बरता ने सामाजिक ताने–बाने को कमजोर किया। देखा जाये तो इन सभी संघर्षों ने 2025 में यह साफ कर दिया कि दुनिया किसी एक महायुद्ध की ओर नहीं, बल्कि एक साथ कई छोटे–छोटे युद्धों और स्थायी अस्थिरता की ओर बढ़ रही है। यह वह दौर है जहाँ सीमाएं बारूद बन चुकी हैं और शांति सिर्फ भाषणों तक सिमट गई है। इसके अलावा, जहाँ दुनिया संघर्ष और अस्थिरता से जूझ रही थी, वहीं डोनाल्ड ट्रंप 2025 के सबसे चर्चित नेताओं में से एक बने रहे। हालांकि उनकी लोकप्रियता सर्वसम्मत नहीं थी। एक ओर उनके समर्थक उन्हें मजबूत, निर्णायक और राष्ट्रवादी नेता मानते रहे, वहीं दूसरी ओर आलोचक उन्हें विभाजनकारी और संस्थाओं को कमजोर करने वाला नेता बताते रहे। ट्रंप की लोकप्रियता दरअसल इस बात का प्रतीक बनी कि दुनिया भर में राजनीति अब सहमति नहीं, बल्कि ध्रुवीकरण से चल रही है। बहरहाल, 2025 ने यह साफ कर दिया कि दुनिया अब पुराने संतुलन की ओर नहीं लौटने वाली। सत्ता परिवर्तन, तख्तापलट, युद्ध और वैचारिक टकराव आने वाले वर्षों की भूमिका लिख चुके हैं। यह साल इस सच्चाई का आईना बन गया कि शांति अब अपवाद बनती जा रही है और संघर्ष नई सामान्य स्थिति। यदि वैश्विक नेतृत्व ने समय रहते संवाद, कूटनीति और सहयोग का रास्ता नहीं चुना, तो 2025 आने वाले बड़े संकटों की शुरुआत साबित होगा।

कांग्रेस ने विभाजन के बीज बोए

बलबीर पुंज

भारतीय उपमहाद्वीप में जो मुस्लिम समूह श्वंदे मातरम्ं के विरोध के पीछे मजहबी कारणों का हवाला देता है, वह वास्तव में भ्रामक और झूठा है। विश्व के इस क्षेत्र में मुसलमानों का एक बड़ा हिस्सा पाकिस्तान को इस्लामी पहचान का प्रतीक मानता है। परंतु पाकिस्तान न तो इस्लाम का रक्षक है, न ही श्उम्माहं के प्रति वफादार। भारत के राष्ट्रीय गीत श्वंदे मातरम्ं के विरोध का कारण क्या है? तथाकथित श्सेकुलरं खेमाकृ जोकि वामपंथियों, स्वयंभू उदारवादियों और मुस्लिम नेतृत्व के एक वर्ग को मिलाकर बना हैकृ उसका दावा है कि वंदे मातरम् श्गैर–इस्लामीं है। सच क्या है? दरअसल, इस आपत्ति की जड़े इस्लामी अवधारणाओं के बजाय भारतीय उपमहाद्वीप के मुस्लिम अभिजात वर्ग में व्याप्त गैर–इस्लामी सनातन सभ्यता के प्रति गहरे द्वेष में अधिक मिलती है। इसी अंतर्निहित वैमनस्य की कोख से पाकिस्तान का जन्म हुआ था, जो आज भी विश्व के इस भूखंड में सांप्रदायिक विभाजनकारी मानसिकता को जिंदा रखे हुए है। जिस तरह संस्थाएं–व्यक्ति समय के साथ बदलते हैं, वैसे ही विचार भी विकसित होते हैं। श्वंदे मातरम्ं बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित गीत है, जिसे पहले 1875 में स्वतंत्र कविता के रूप में लिखा गया, फिर यह 1882 में श्आनंदमठं उपन्यास में शामिल हुआ। यह साहित्य 1773 के श्संन्यासी विद्रोहं पर आधारित है, जो ब्रितानी शासन और तत्कालीन इस्लामी–व्यवस्था के विरुद्ध था। बीसवीं सदी की शुरूआत से यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन का सबसे शक्तिशाली नाद बन गया। कांग्रेस स्वयं भी इस वैचारिक रूपांतरण का एक बड़ा उदाहरण है। 1885 में अंग्रेज अधिकारी एलन ऑक्टेवियन ह्यूम द्वारा स्थापित कांग्रेस पहले ब्रिटिश–राज की स्थिरता और 1857 जैसे विद्रोह को रोकने का कुटिल उपक्रम था। परंतु एक पीढ़ी के भीतरकृ विशेषकर वर्ष 1920 के बाद गांधीजी के नेतृत्व में, वही दल जन–आधारित राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी धुरी बन गया। क्या केवल इस कारण कांग्रेस को खारिज किया जा सकता है कि उसकी स्थापना एक अंग्रेज ने ब्रितानी हितों की रक्षा हेतु की थी? यदि नहीं, तो फिर श्वंदे मातरम्ं का विरोध उसके मूल साहित्यिक संदर्भ के नाम पर कैसे जायज ठहराया जा सकता है? वर्ष 1896 में कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर ने इस गीत को पहली बार गाया। 1905 के वाराणसी अधिवेशन में कांग्रेस ने इसे राष्ट्रीय अवसरों पर गाने का औपचारिक निर्णय लिया। वर्ष 1907 में मैडम भीकाजी कामा ने देश के बाहर जर्मनी में पहली बार भारतीय तिरंगा फहराया, जिस पर श्वंदे मातरम्ं लिखा था। 1909 में वीर क्रांतिकारी मदनलाल ढींगरा 1909 में श्वंदे मातरम्ं बोलते हुए फांसी पर चढ़ गए। खिलाफत आंदोलन (1919–24) के बाद कुछ मुस्लिम नेताओं ने मजहबी आधार पर इसके खिलाफ आपत्ति उठानी शुरू कर दी। यह वही दौर था, जब ब्रिटिश संरक्षण में देश में अलगाववादी शक्तियां (द्रविड़ आंदोलन सहित) तेजी से बढ़ रही थीं। तब मुस्लिम नेतृत्व का कांग्रेस–विरोध केवल वंदे मातरम् तक सीमित नहीं था। उन्होंने लगभग हर उसका विरोध किया, जो भारत की सभ्यतागत विविधता और सांस्कृतिक आत्मा का प्रतीक रहा। इसमें वे ब्रितानियों और वामपंथियों के साथ खड़े दिखाई दिए। अपने पिछले लेख में मैंने पीरपुर समिति रिपोर्ट का उल्लेख किया था। मार्च 1938 में प्रकाशित इस दस्तावेज का औपचारिक नामकृ ष्ए रिपोर्ट ऑफ द इन्क्वारी कमेटी अप्वाइंटेड बाय द काउंसिल ऑफ द ऑल इंडिया मुस्लिम लीगष् था। यह पीरपुर रिपोर्ट के नाम से इसलिए प्रसिद्ध हुई, क्योंकि इसके रचनाकार मुस्लिम लीग नेता राजा मोहम्मद मेहदी ऑफ पीरपुर थे। इस रिपोर्ट में हिंदू, हिंदू सांप्रदायिकता और कांग्रेसकृ तीनों का अर्थ एक ही था। इसमें हिंदी भाषा के प्रयोग, वंदे मातरम् और गौसंरक्षण जैसे मुद्दों को उठाया गया। तत्कालीन कांग्रेस नेतृत्व ने मुस्लिम लीग के अधिकांश आरोपों को निराधार बताया। परंतु उसने विरोध करने के बजाय जिहादी शक्तियों के सामने घुटने टेक दिए और अक्टूबर 1937 में कांग्रेस कार्यसमिति ने वंदे मातरम् का संक्षिप्त संस्करण अपनाकर देवी दुर्गा से जुड़े अंश हटा दिए। यह निर्णय देश पर भारी पड़ा। तब पीरपुर रिपोर्ट को आधार बताकर नैरेटिव गढ़ा गया कि स्वतंत्र भारत में मुसलमानों को न्याय नहीं मिलेगा, इसलिए पाकिस्तान जरूरी है। इसी आत्मसमर्पण वाली मानसिकता से ग्रस्त होकर दस वर्ष बाद जून 1947 में कांग्रेस ने विभाजन भी स्वीकार कर लिया। पीरपुर रिपोर्ट में जो आरोप तब कांग्रेस पर लगाए गए थे, वह आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरएसएस पर मढ़े जाते हैं। क्या विभाजन के बाद खंडित भारत में बसे मुस्लिम समुदाय का दिल बदल गया? बार–बार नैरेटिव गढ़ जाता है कि वर्तमान भारतीय मुसलमानों ने श्दो–राष्ट्र सिद्धांतं को ठुकराकर पाकिस्तान के बजाय खंडित भारत को चुना। यदि यह सच है, तो फिर भारतीय सभ्यता का प्रतीक वंदे मातरम् आज भी उसी समुदाय के कुछ हिस्सों को क्यों खटकता है? यह कटु सत्य है कि पाकिस्तान की मांग तब बिहार, उत्तरप्रदेश और बंगाल के मुस्लिम अभिजात वर्ग ने की थी, उनमें से अधिकांश पाकिस्तान नहीं गए।

दिग्विजय का ट्वीट और कांग्रेस में नई हलचल

शकील

भारत की राजनीति में यह तीन विचारधाराएं ही मुख्य रही हैं। लेफ्ट, राइट और सेंटर। सेंटर की पार्टी कांग्रेस जो मूलतरू जन आंदोलन से उपजी। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व के गौरव के साथ। संयोग से आज जब हम यह लिख रहे हैं तो इसका स्थापना दिवस भी है। 140 वां। लेफ्ट राइट दोनों की पार्टियों से ज्यादा पुरानी। और पुरानी है तो इसके साथ लोगों की भावनाएं भी पुरानी है और उम्मीदें भी। आरएसएस के संगठन और कांग्रेस के संगठन में फर्क है। कांग्रेस एक आजादी के आंदोलन से निकली पार्टी है। उसका संगठन किसी और पार्टी की तरह नहीं हो सकता। चाहे वह भाजपा आरएसएस हो या लेफ्ट। भारत में लेफ्ट की मूल पार्टी सीपीआई भी सौ साल की हो गई है। और उसकी ठीक विपरीत विचारधारा राइट की आरएसएस भी सौ साल की हो गई है।भारत की राजनीति में यह तीन विचारधाराएं ही मुख्य रही हैं। लेफ्ट, राइट और सेंटर। सेंटर की पार्टी कांग्रेस जो मूलतरू जन आंदोलन से उपजी। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व के गौरव के साथ। संयोग से आज जब हम यह लिख रहे हैं तो इसका स्थापना दिवस भी है। 140 वां। लेफ्ट राइट दोनों की पार्टियों से ज्यादा पुरानी। और पुरानी है तो इसके साथ लोगों की भावनाएं भी पुरानी है और उम्मीदें भी। क्या दिग्विजय सिंह का ट्वीट भी इन्हीं भावनाओं और उम्मीदों से प्रेरित है? कांग्रेस के सबसे वरिष्ठ नेताओं में से एक। जिनकी आरएसएस और भाजपा से लड़ाई किसी से छुपी नहीं है। जो हर मौके बेमौके पर आरएसएस भाजपा पर हमला करते रहते हैं। श्रीनगर में भी उस समय कर दिया था जब राहुल अपनी भारत जोड़ो यात्रा का वहां समापन कर रहे थे। और दिग्विजय इस यात्रा के संयोजक थे। वहां उन्होंने पुलवामा हमले का सवाल उठा दिया था।इसे कांग्रेस में बेमौके का सवाल माना गया था। क्योंकि भाजपा को दिग्विजय के बहाने राहुल की यात्रा पर हमला करने का मौका मिल गया था। ऐसे ही शनिवार को कांग्रेस की सर्वोच्च नीति निर्धारक इकाई सीडब्ल्यूसी की मीटिंग से ठीक पहले दिग्विजय ने मोदी का आडवानी की कुर्सी के नीचे जमीन पर बैठे होने का एक पुराना फोटो ट्वीट करते हुए उनके संगठन की तारीफ कर दी थी। जिसे लेकर कांग्रेस में बड़ा विवाद शुरू हो गया है। और बीजेपी खुश होकर इसे कांग्रेस के अंदरूनी संघर्ष के रूप में पेश कर करने लगी।राजनीति अजीब शै है। इस ट्वीट के पहले तक कोई सोच नहीं सकता था दिग्विजय कभी संघ भाजपा की तारीफ कर सकते हैं। अभी आठ–दस दिन पहले राज्यसभा में चुनाव सुधार की बहस पर दिग्विजय ने मोदी और अमित शाह पर बहुत कड़े हमले किए थे। मगर इस ट्वीट के बाद दिग्विजय कांग्रेस में भी निशाने पर आ गए हैं। वैसे कांग्रेस में दिग्विजय का निशाने पर आना कोई खास बात नहीं है। यूपीए के समय में मीडिया डिपार्टमेंट रोज उन्हें चेतावनियां देता था। उस समय के चौयरमेन जनार्दन द्विवेदी उनके बयानों को व्यक्तिगत बताते हुए कहते थे पार्टी का इससे कोई संबंध नहीं है।मगर वह समय अलग था। सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष थीं। जिन्हें याद था कि 2004 से पहले कांग्रेस चलाने में दिग्विजय कितनी मदद करते थे। 2003 तक दिग्विजय मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री थे। और उस समय केवल दो राज्यों में कांग्रेस सरकार थी। मध्य प्रदेश और केरल। और केरल के मुख्यमंत्री थे ए के एंटोनी। जिन्हें पार्टी में ही नहीं पार्टी के बाहर भी ईमानदारी का अवतार माना जाता है। पार्टी चलाने का सारा खर्चा दिग्विजय वहन करते थे। 1998 में सोनिया गांधी ने जब कांग्रेस की बागडोर संभाली तब उनका भारी विरोध हो रहा था। उन्हें स्वीकार्यता दिलाने के लिए दिग्विजय ने 1998 में कांग्रेस का पहला चितंन शिविर पचमढ़ी में आयोजित किया था। जिसके बाद ही सोनिया पार्टी की एकमात्र नेता के रूप में स्थापित होना शुरू हो गईं थीं।तो 2004 की लोकसभा जीत के बाद सोनिया के दिल में दिग्विजय का विशेष स्थान रहा। यह इस बात से और बढ़ गया कि उन्होंने यूपीए सरकार में मंत्री पद लेने से मना कर दिया। राजनीति में कोई पद के लिए मना करे ऐसा होता नहीं। और कांग्रेस में तो खासतौर से नहीं। मगर दिग्विजय ने प्रण किया था कि अगर 2003 विधानसभा में कांग्रेस हार जाएगी तो वे दस साल तक कोई सरकारी पद नहीं लेंगे। और उन्होंने ऐसा किया भी। मगर अब जनरेशन चेंज हो गया है। सोनिया गांधी डीसिजन में कहीं नहीं हैं। कई वरिष्ठ नेताओं के साथ दिग्विजय की पीड़ा भी यही है कि कभी संगठन में इतनी महत्वपूर्ण स्थिति में रहने के बाद अब अवांछनीय हो गए हैं। इस बेमौके ट्वीट के पीछे यह दर्द हो सकता है। उन्होंने ट्वीट के बाद खुद कहा कि वे आरएसएस भाजपा के घोर विरोधी हैं। संगठन के एक पहलू की तारीफ करना विचारधारा की तारीफ नहीं है। लेकिन उनकी राज्यसभा खत्म होने की कहानी सुनाई जा रही है। हालांकि पता नहीं कितने लोगो को मालूम है वे साफ कह चुके हैं कि अब वे राज्यसभा नहीं लेंगे। लेकिन जाते हुए 2025 में यह एक नया विवाद हो गया है। साल शुरू से ही कांग्रेस के लिए अच्छा नहीं रहा। एक भी विधानसभा चुनाव नहीं जीती। 2024 में लोकसभा का चुनाव छोड़ दिया जाए तो राज्यों में भी उसे कोई सफलता नहीं मिली। केवल झारखंड में वह मिलीजुली सरकार में वापस आ पाई। सबसे ज्यादा अप्रत्याशित नतीजे हरियाणा के रहे। जहां सब कांग्रेस की

जीत मान रहे थे। वहां भी बीजेपी जीत गई। महाराष्ट्र और बिहार में मुकाबला बराबरी का माना जा रहा था मगर वहां नतीजे एकदम इकतरफा रहे। लेकिन इन सारी हारों के बाद भी लोगों की कांग्रेस से उम्मीदें कम नहीं हुईं। क्या है वजह? वजह यह है कि लोग आज चाहे जितने नफरत और विभाजन की सनसनी में जी रहे हों मगर अंदर से प्रेम शांति सुख चाहते हैं। और कांग्रेस इन्हीं मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। 140 साल में बहुत उतार चढ़ाव आए मगर कांग्रेस के मूल सिद्धांत वही रहे। गरीब समर्थक और सांप्रदायिक सौहार्द्र। निर्भयता और आशावाद। और यही वजह है कि जनता को अगर उम्मीदें हैं तो उसी से। और इसी से ताकत पाकर कांग्रेस लड़ती है। 2026 के लिए दो बड़े आंदोलनों का कार्यक्रम उसने जारी कर दिया। 5 जनवरी से मनरेगा हटाए जाने के खिलाफ और 7 जनवरी से अरावली बचाओ। दोनों सीधे जनता से जुड़े मुद्दे हैं। और अब जनता को यहां खासतौर से ग्रामीण जनता को सोचना चाहिए कि वह मनरेगा चाहती है या सामंतों के यहां बेगारी या शहर आकर सस्ता मजदूर बनकर बड़े उद्योगपतियों का मुनाफा बढ़ाना।ऐसे ही अरावली के मामले में सोचना चाहिए कि एयरपोर्ट, बंदरगाह, रेल्वे स्टेशन दूसरे सरकारी उपक्रम बेचते बेचते यह पर्वतमालाएं भी बेचने लगे। नदियां, जंगल, पहाड़ सब बिक जाएगा। और फिर हवा जमीन पानी कुछ भी देश का सरकार का नहीं रहेगा। सब जैसा राहुल कहते हैं अडानी अंबानी को दे दिया जाएगा। हवा के बारे में आजकल आप सुन ही रहे हैं कि कोर्ट कह रहा है एयर प्यूरी फायर से टैक्स कम करो।

राहुल–खड़गे को सावधान होने की जरूरत

विजय

देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस ने 28 दिसंबर को अपनी स्थापना के 140 साल पूरे किए। एक संगठन, एक राजनैतिक दल के तौर पर तमाम उतार–चढ़ावों के बीच इतना लंबा सफर तय करना ही अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। कांग्रेस ने अंग्रेजी हुकूमत को खत्म करने के लिए लंबी लड़ाई लड़ी। जिसमें वक्त के अनुसार तरीके बदलते रहे। कांग्रेस के भीतर अलग विचारधाराएं पनपीं, जिनके कारण कई बार पार्टी में टूट हुई। कांग्रेस से निकले लोगों ने अपने नए दल बनाए, कभी उन दलों का कांग्रेस में विलय हुआ, कभी वे साथ चलते रहे। कांग्रेस ने कई बार भितरघात भी सहे। लेकिन इन सबके बीच कभी भी अपनी मूल विचारधारा को नहीं छोड़ा, जो असल में भारत की उदार और समावेशी संस्कृति से निकली है। जिसमें किसी भी किस्म के भेदभाव, संकीर्णता, सांप्रदायिकता, नफरत और हिंसा के लिए जगह नहीं है। उच्च नैतिक आदर्शों के साथ अस्तित्व को कायम रखना आसान नहीं था, लेकिन कांग्रेस इस कसौटी पर खरी उतरती आई है।स्थापना दिवस समारोह को संबोधित करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने बिल्कुल सही कहा कि जो लोग यह कहते हैं कि कांग्रेस खत्म हो चुकी है, उन्हें साफ संदेश है कि पार्टी भले सत्ता में न हो, लेकिन उसकी रीढ़ सीधी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने न कभी संविधान से समझौता किया, न धर्मनिरपेक्षता से और न ही लोगों के अधिकारों से। श्री खड़गे ने साफ कहा कि कांग्रेस सिर्फ एक पार्टी नहीं, बल्कि एक विचारधारा है, जो कभी खत्म नहीं हो सकती। आज जब संविधान और लोकतंत्र खतरे में हैं, कांग्रेस उसी भारत के लिए संघर्ष जारी रखेगी, जिसका सपना स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था। यह लड़ाई सत्ता के लिए नहीं, बल्कि देश की आत्मा और संविधान को बचाने की है। इसी तरह राहुल गांधी ने भी कहा कि कांग्रेस हमेशा समाज के कमजोर, वंचित और मेहनतकश वर्ग के साथ खड़ी रही है और आगे भी उनके अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करती रहेगी। कांग्रेस का संकल्प नफरत, अन्याय और तानाशाही के खिलाफ सत्य, साहस और संविधान की रक्षा की लड़ाई को और मजबूत करने का है। यह लड़ाई सत्ता के लिए नहीं, बल्कि देश के लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान को बचाने के लिए है। मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी ने संविधान बचाने के लिए कांग्रेस के संघर्ष को जारी रखने का जो आह्वान किया है, उसमें एक तरफ कांग्रेस कार्यकर्ताओं को निराशा से बाहर निकालने और लंबी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार किया गया है, वहीं दिग्विजय सिंह जैसे वरिष्ठ नेताओं को इशारे से जवाब भी दिया गया है कि सत्ता रहे न रहे लेकिन रीढ़ सीधी होनी चाहिए यानी आत्मसम्मान बना रहना चाहिए, जिसमें कांग्रेस अब तक सफल रही है। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने 27 दिसंबर को लालकृष्ण आडवानी और नरेन्द्र मोदी की एक पुरानी तस्वीर शेयर करते हुए भाजपा और संघ के संगठन की तारीफ की, कि जमीन पर बैठने वाला एक कार्यकर्ता भी मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री बन गया। इस तस्वीर में आडवानी सोफे पर बैठे हैं और नरेन्द्र मोदी जमीन पर।दिग्विजय सिंह की पोस्ट पर सवाल उठने लगे कि क्या श्री सिंह अब भाजपा में जाने की तैयारी कर रहे हैं या ये राज्यसभा में फिर से आने की भूमिका बांधी गई है। दिग्विजय सिंह ने क्या राहुल गांधी और कांग्रेस में गांधी परिवार के रसूख पर हमला बोला है, ये कयास भी लगे। वहीं कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने दिग्विजय सिंह का समर्थन किया है और कहा श्जी हां मैं भी यही चाहता हूं कि पार्टी संगठन को मजबूत करने पर जोर दिया जाएश्। हमारा 140 साल का इतिहास है, और हम इससे बहुत कुछ सीख सकते हैं। हम खुद से भी बहुत कुछ सीख सकते हैं।सब जानते हैं कि कांग्रेस में जहां अध्यक्ष का बाकायदा चुनाव होता है, वहीं भाजपा में अंदरूनी लोकतंत्र नाम की कोई चीज नहीं है। वहां पहले से टू मच डेमोक्रेसी की पहचान करते हुए एक किस्म की तानाशाही बनी हुई है। पार्टी का संविधान कुछ भी कहे, भाजपा में आज की तारीख में वही होता है, जो नरेन्द्र मोदी और अमित शाह तय करते हैं। चाहे दिग्गज नेताओं को एक झटके में किनारे करते हुए कम पहचाने चेहरों में से किसी को मुख्यमंत्री बनाना हो या जब मन चाहे मुख्यमंत्री समेत पूरी केबिनेट बदलना हो या रातों रात किसी को कार्यकारी अध्यक्ष बनाना हो और अध्यक्ष का कार्यकाल खत्म होने के बावजूद उसे एक्सटेंशन पर एक्सटेंशन देना हो, मोदी–शाह की जोड़ी ही सारे फैसले लेती है और इसमें किसी जमीन पर बैठने वाले कार्यकर्ता की बात तो दूर, कई सालों से सांसद और विधायक बनने वाले वरिष्ठ नेता भी हूं चूं नहीं कर पाते। जिन लालकृष्ण आडवानी के सामने नरेन्द्र मोदी जमीन पर बैठे थे, उन्हीं आडवानी को कैसे कई मौकों पर मोदी ने बेइज्जत किया है, ये भी दिग्विजय सिंह और शशि थरूर ने देखा ही है। फिर भी उन्हें भाजपा और संघ से प्रेरित होना हो, तो इसमें अब मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी को सावधान होने की जरूरत है। भाजपा तो मोदी सरकार के पहले कार्यकाल से कांग्रेस मुक्त भारत बनाने की बात कहती आई। उसमें सफल नहीं हो पाई तो कांग्रेस में बड़ी सेंध लगाकर उसके कई नेताओं को भगवा गमछा ओढ़ा दिया। राहुल गांधी ने तब भी कहा कि अच्छा है हमारे यहां सफाई हो गई। अभी लोकसभा हारने के बाद महाराष्ट्र, हरियाणा और बिहार भी कांग्रेस हारी, लेकिन फिर भी उतने ही दम से कांग्रेस भाजपा को मनरेगा खत्म करने से लेकर अरावली में खनन और एसआईआर की गड़बड़ियों पर चुनौती दे रही है। 14 दिसंबर को रामलीला मैदान में कांग्रेस की जमीनी ताकत भाजपा ने देखी है और अब 5 जनवरी से मनरेगा बचाने के लिए फिर से कांग्रेस आंदोलन की शुरुआत कर रही है। इन सबसे भाजपा को यह समझ आ रहा है कि कांग्रेस को दबाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है। क्योंकि मल्लिकार्जुन खड़गे और राहुल गांधी दोनों ने कहा है कि कांग्रेस सत्ता की नहीं, विचारधारा की लड़ाई लड़ती है और इस देश की जनता की आत्मा है। इसलिए दिग्विजिय सिंह जैसे नेताओं के बयानों में भाजपा अपने लिए अवसर तलाशती है। अब श्री सिंह भले कहें कि वो संघ की विचारधारा के खिलाफ हैं और केवल संगठन की तारीफ कर रहे थे। लेकिन सवाल तो बना हुआ है।

मार्कशीट फर्जीवाड़े में फिर आया हिमालयन गढ़वाल विवि का नाम, गिरफ्तार मास्टरमाइंड ने उगले कई राज

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ में फर्जी मार्कशीट मामले में एक बार फिर महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विवि उत्तराखंड का नाम सामने आया है। एक अभ्यर्थी ने इस विश्वविद्यालय की मार्कशीट सरकारी स्कूल में नौकरी के लिए लगाई थी। छानबीन में पता चला कि मार्कशीट फर्जी है। गोमतीनगर थाने की पुलिस व पूर्वी जोन की क्राइम टीम ने शनिवार को फर्जी मार्कशीट बनाने वाले गिरोह के मास्टरमाइंड अयोध्या के पूरा कलंदर निवासी सत्येंद्र द्विवेदी, उन्नाव के बीघापुर के अखिलेश कुमार और लखीमपुर खीरी के ईशानगर निवासी सौरभ शर्मा को गिरफ्तार किया। इनके पास से 923 फर्जी मार्कशीट और इसे बनाने का सामान भी बरामद हुआ। आरोपियों की गिरफ्तारी के बाद जिन 25 विश्वविद्यालयों का नाम सामने आया, उसमें महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विवि उत्तराखंड भी शामिल है। मार्कशीट फर्जीवाड़े में इस विवि का नाम दूसरी बार सुर्खियों में आया है। इससे पहले 2024 में इसका नाम तब आया था जब एक युवक ने मेरठ के लावड़ा स्थित राष्ट्रीय इंटर कॉलेज में प्रवक्ता पद के लिए मार्कशीट लगाई थी। संदेह होने पर कॉलेज के प्रधानाचार्य ने मार्कशीट का सत्यापन कराने के लिए कहा था। हालांकि, तब कुछ नहीं हुआ। प्रधानाचार्य ने आरटीआई के जरिये महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विवि से जवाब मांगा था। लेकिन, प्रशासन ने कोई उत्तर नहीं दिया था। ऐसे में तत्कालीन राज्य सूचना आयुक्त ने मौके पर ही मार्कशीट का सत्यापन किया तो वह फर्जी पाई गई थी। विवि में जब संबंधित छात्र के रिकॉर्ड देखे गए तो वहां कुछ नहीं मिला। साथ ही विवि ने ऐसे किसी छात्र को मार्कशीट जारी करने की बात से इन्कार कर दिया था। इस पर आयोग ने विवि प्रशासन से स्पष्टीकरण मांगा था। मार्कशीट और डिग्री बनाने के मामले में पकड़े गए आरोपियों ने 2021 से अब तक 1500 छात्रों को फर्जी मार्कशीट बेची थी। ऐसे में पूरी आशंका है कि जिस छात्र ने मेरठ में प्रवक्ता पद के लिए आवेदन किया था, वह 1500 छात्रों में से ही एक हो। क्योंकि इसकी पूरी संभावना बनी हुई है कि 1500 छात्रों ने प्राइवेट के साथ ही सरकारी विभागों में आवेदन किए हों या फिर उनकी नौकरी भी लग चुकी हो। पुलिस के मुताबिक, मामले की जांच चल रही है।

गांव में फंदे से लटका मिला अधेड़ का शव, पत्नी की हो चुकी मौत

लखनऊ, (संवाददाता)। यूपी के बाराबंकी में सोमवार की सुबह अधेड़ का शव गांव से करीब 500 मीटर दूर पेड़ से लटकता मिला। खबर मिली तो घरवाले रोते बिलखते पहुंचे। मौके पर लोगों की भीड़ लग गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मौका मुआयना करके घटना की जानकारी ली। आगे की कार्रवाई की जा रही है। घटना रामनगर थाना क्षेत्र के सोंधवा गांव की है। गांव के ही रनधीर सिंह (55) का शव पेड़ से लटकता मिला है। परिजनों के अनुसार, रनधीर रविवार की रात करीब 8 बजे वह नशे की हालत में घर से निकले

थे। इसके बाद से उनका कोई पता नहीं था। सुबह उनकी तलाश की जा रही थी। इसी समय बड़े भाई अमरेश कुमार ने आम के पेड़ से शव लटकता देखा। परिजनों ने बताया कि रनधीर की पत्नी का करीब दो वर्ष पूर्व निधन हो चुका है। उनको एक पुत्र और एक पुत्री है। दोनों की शादी हो चुकी है। पुत्र दिल्ली में रहकर काम करता है। पत्नी के निधन के बाद से रनधीर की मानसिक स्थिति ठीक नहीं रहती थी।

संक्षिप्त खबरें

नेत्र शिविर में 50 लोगों का परीक्षण

लखनऊ, (संवाददाता)। सद्गुरुशण चंद्र स्मृति साहित्यिक एवं सामाजिक संस्था के तत्वावधान में रविवार को जानकीपुरम विस्तार सेक्टर–8 स्थित टंकी वाले पार्क में निशुल्क नेत्र परीक्षण शिविर लगा। इसमें केजीएमयू के डॉ. सदफ, डॉ. रितिक, डॉ. भानु, डॉ. आयुष, अनुभवी व सूरज ने 50 लोगों का परीक्षण किया। अनिल त्रिपाठी, नरेश कुमार ढल, चंद्र शेखर, नीरज मेहरोत्रा ने नेत्रदान का संकल्प किया। कार्यक्रम में विनय कृष्ण पांडेय, जेसी श्रीवास्तव, पीके सैनी, आरपी यादव, दिलीप कुमार उपस्थित थे।

सुनाई कविताएं, सम्मानित हुए रचनाकार

लखनऊ, (संवाददाता)। गोमतीनगर के हुसड़िया चौराहे के निकट हिंदी मीडिया सेंटर में आभूषण काव्यात्मक अभिव्यक्ति पटल की ओर से काव्य समारोह हुआ। अध्यक्ष डॉ. अलका गुप्ता प्रियदर्शिनी के संयोजन में रचनाकारों ने काव्यपाठ किया। इस दौरान कृति मेरे राघव का विमोचन भी किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. उषा सिन्हा की मौजूदगी में हुए काव्य समारोह में ऋतु श्रीवास्तव ने पढ़ा– बेटी चली ससुराल मांग में सेंदुर है...। डॉ. माधवी मिश्रा ने सुनाया– प्रेम का एक कठिन इतिहास रचा रचनाकारों ने...। डॉ. रेखा गुप्ता, अदिति प्रभाकर अदिति, डॉ. हरी प्रकाश हरि, डॉ. अनुराधा पांडेय, पूर्णिमा संघी बंसल, गीता रस्तोगी, शालिनी राय, अजीत सिंह शामली, सुरेश चंद्र गुप्ता ने भी काव्यपाठ किया। सभी रचनाकारों को प्रमाणपत्र व ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

राम औतार के छंद संग्रह का लोकार्पण

लखनऊ, (संवाददाता)। हजरतगंज स्थित उप्र प्रेस क्लब में रविवार को साहित्यिक संस्था चेतना साहित्य परिषद की ओर से लोकार्पण कार्यक्रम हुआ। इसमें साहित्यकार राम औतार श्पंकजश्श के छंद संग्रह श्छंद–वीथिकाश्श का लोकार्पण हुआ। अध्यक्षता प्रो. हरिशंकर मिश्र ने की। मुख्य अतिथि लखनऊ विवि की पूर्व विभागाध्यक्ष उषा सिन्हा रहीं। विशिष्ट अतिथि डॉ. उमा शंकर शुक्ल रहे। मुख्य वक्ता अशोक कुमार पांडेय ने संबोधित किया। संचालन संस्था के महामंत्री प्रमोद द्विवेदी ने किया। डॉ. अरविंद झा, संस्थाध्यक्ष डॉ. शिव भजन कमलेश ने छंदों का पाठ किया। संस्था के सांस्कृतिक मंत्री डॉ. आशुतोष वाजपेयी व अन्य लोग मौजूद रहे।

काव्य संग्रह निर्विवाद और अन्य कविताएं का विमोचन

लखनऊ, (संवाददाता)। केएमसी भाषा विश्वविद्यालय के अटल सभागार में रविवार को युवा कवि पवन कुमार सिंह के काव्य संग्रह निर्विवाद और अन्य कविताएं का विमोचन व परिचर्चा आयोजित हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अजय तनेजा ने की। परिचर्चा में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. जनार्दन, त्रिपुरा केंद्रीय विश्वविद्यालय के प्रो. मनोज कुमार मौर्य, केंद्रीय उच्च तिब्बती संस्थान वाराणसी के प्रो. सुशील कुमार सिंह, किसान पीजी कॉलेज के प्रो. चंद्रदेव सिंह व विशिष्ट अतिथि प्रो. बलवंत सिंह ने विचार रखे।

तेलीबाग और दुबग्गा में आम नागरिकों को अभी और झेलना होगा जाम का झाम

लखनऊ, (संवाददाता)। सेतु निगम के 360 करोड़ रुपये की लागत से प्रस्तावित तेलीबाग और दुबग्गा फ्लाईओवर निर्माण से पहले ही फाइलों में अटक गए हैं। चालू वित्तीय वर्ष 2025 में निर्माण शुरू करने की तैयारी ठंडे बस्ते में चली गई है। इसका असर यह होगा कि दोनों चौराहों पर लोगों को अभी लंबे समय तक जाम की परेशानी झेलनी पड़ेगी। सेतु निगम मुख्यालय के अधिकारियों के अनुसार, दोनों फ्लाईओवर को कार्ययोजना में शामिल करने के लिए शासन को प्रस्ताव भेजा गया था, लेकिन मंजूरी नहीं मिल सकी। इसके चलते वित्तीय वर्ष 2025–26 की कार्ययोजना में ये परियोजनाएं शामिल नहीं हो पाईं। निर्माण शुरू न होने से सुबह से देर रात तक यातायात दबाव बना रहेगा। खासतौर पर तेलीबाग चौराहे पर छह मार्ग जुड़ने के कारण जाम की समस्या गंभीर है और मरीजों को लेकर आने–जाने वाली एंबुलेंसें भी अक्सर फंस जाती हैं। अब इन फ्लाईओवर के 2026–27 में स्वीकृत होने की उम्मीद जताई जा रही है। तेलीबाग चौराहे पर एक राजनेता की पैरवी के बाद सर्वे कर 160 करोड़ रुपये की लागत का एस्टीमेट तैयार कर शासन को भेजा गया था। सेतु निगम को उम्मीद थी कि फरवरी में निर्माण शुरू हो जाएगा। नियम के अनुसार 2025–26 की कार्ययोजना में शामिल परियोजनाओं का कार्य चालू वित्तीय वर्ष में शुरू किया जाना प्रस्तावित था। शासन की 2025–26 की कार्ययोजना में 33 रेलवे ओवरब्रिज (आरओबी) शामिल किए गए हैं, लेकिन एक भी फ्लाईओवर को मंजूरी नहीं मिली। दुबग्गा चौराहे पर सुबह से देर रात तक जाम की स्थिति बनी रहती है। यहां प्रस्तावित फ्लाईओवर पर करीब 200 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है, जिसका एस्टीमेट भी शासन स्तर पर अटका हुआ है।

मिट्टी से मंच तक आत्मनिर्भरता का सफर

लखनऊ, (संवाददाता)। ऐशबाग स्थित गोपीनाथ लक्ष्मण दास रस्तोगी इंटर कॉलेज परिसर में भारत स्काउट एंड गाइड उत्तर प्रदेश की ओर से आयोजित तीन दिवसीय वार्षिक रैली का रविवार को भव्य समापन हुआ। रैली के अंतिम दिन स्काउट–गाइड्स ने बिना बर्तन के पारंपरिक तरीके से पकवान तैयार कर आत्मनिर्भरता और जीवन कौशल का अनूठा उदाहरण पेश किया। तीन दिनों तक चले इस शिविर ने यह साबित कर दिया कि स्काउट–गाइड सिर्फ गतिविधि नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। मुख्य अतिथि भारत स्काउट एंड गाइड उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष डॉ. महेंद्र सिंह ने प्रतिभागियों द्वारा तैयार किए गए बाटी–चोखे का स्वाद लिया और उनकी रचनात्मकता व अनुशासन की सराहना की। इससे पहले उन्होंने स्काउट–गाइड्स की ओर से लगाई गई झांकियों, टेंट पिचिंग और कैंप अनुशासन का निरीक्षण किया। रैली के दौरान विभिन्न विद्यालयों की टीमों ने रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के माध्यम से सेवा, एकता और अनुशासन का संदेश दिया। कार्यक्रम में जिला मुख्यायुक्त डॉ. जे.पी. मिश्र भी मौजूद रहे। समापन अवसर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली 42 टीमों को 'ए' ग्रेड, आठ टीमों को 'बी' ग्रेड और तीन टीमों को 'सी' ग्रेड की शील्ड प्रदान की गई। साथ ही निर्णायकों, रोवर्स, रेंजर्स और डीओसी गाइड मधु हंसपाल को भी सम्मानित किया गया।

संक्षिप्त खबरें

प्रो. सिंघल की भारतीय आधुनिक कला पर था प्रभाव

लखनऊ, (संवाददाता)। कैसरबाग स्थित सुखवीर सिंघल आर्ट गैलरी में रविवार को लोक संस्कृति शोध संस्थान की ओर से कार्यक्रम हुआ। 81वीं लोक चौपाल में कलाविद् प्रो. सुखवीर सिंघल को याद किया गया और उनकी कृतियों में लोकबोध और शास्त्रीय दृष्टि के समन्वय पर चर्चा हुई। वक्ताओं ने कहा कि प्रो. सिंघल भारतीय आधुनिक कला के ऐसे महत्वपूर्ण हस्ताक्षर रहे हैं जिनकी रचनात्मक दृष्टि में लोक संवेदना का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। उनकी कला और विचारधारा नई पीढ़ी को सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने का कार्य कर रही है। कार्यक्रम की अध्यक्षता चौपाल चौधरी विमल पंत एवं डॉ. रामबहादुर मिश्र ने संयुक्त रूप से की। आर्ट गैलरी के व्यवस्थापक राजेश जायसवाल ने कहा कि लोक और कला का सतत संवाद हमारी सांस्कृतिक पहचान को जीवंत बनाए रखता है। प्रो. सुखवीर सिंघल की नातिन प्रियम चंद्रा ने बताया कि वे अपने नाना के कृतित्व के संरक्षण–संवर्द्धन के लिए तत्पर हैं और उसी क्रम में उनकी कृतियों पर केंद्रित तीन खंडों का प्रकाशन कर रही हैं जिसमें पहला खंड इसी वर्ष प्रकाशित हुआ है।

ट्रॉमा से निजी आयुर्वेद कॉलेज शिफ्ट हो रहे मरीज

लखनऊ, (संवाददाता)। केजीएमयू के ट्रॉमा सेंटर में इन दिनों निजी आयुर्वेद कॉलेजों के एजेंटों का एक संगठित सिंडिकेट सक्रिय है। ये एजेंट ट्रॉमा सेंटर में बेड या वेंटिलेटर न मिल पाने वाले मजबूर तीमारदारों को बहलाकर निजी अस्पतालों में ले जा रहे हैं। हाल ही में इन एजेंटों का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, जिसके बाद डिप्टी सीएम से एक्स पर लिखित शिकायत की गई है। ट्रॉमा सेंटर में प्रतिदिन 250 से 300 गंभीर मरीज पहुंचते हैं। जब आईसीयू या वेंटिलेटर खाली नहीं होता, तो डॉक्टर अक्सर तीमारदारों को दूसरे उच्च संस्थान जाने की सलाह देते हैं। इसी स्थिति का फायदा उठाकर गेट पर खड़े निजी एंबुलेंस और एजेंट सक्रिय हो जाते हैं। वायरल वीडियो में एजेंट ट्रॉमा परिसर के अंदर सरकारी एंबुलेंस के पास खड़े होकर तीमारदारों से मोलभाव करते नजर आ रहे हैं। आरोप है कि वे सस्ते इलाज का झांसा देकर मरीजों को निजी आयुर्वेद कॉलेजों में शिफ्ट करवा देते हैं। आरोप है कि इस खेल में कुछ जूनियर डॉक्टर भी शामिल हैं। ट्रॉमा प्रभारी डॉ. प्रेमराज ने मामले में जांच के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि यदि कोई भी बाहरी एजेंट परिसर के भीतर पाया गया, तो उसे तत्काल पुलिस के हवाले किया जाएगा। सिंडिकेट में यदि केजीएमयू के किसी भी डॉक्टर या कर्मचारी की संलिप्तता पाई गई, तो उनके खिलाफ कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

डॉ. बृजेंद्र निगम की दो कृतियों का विमोचन

लखनऊ, (संवाददाता)। हजरतगंज स्थित हिंदी स्थान में रविवार को सर्वजन हिताय साहित्यिक समिति की ओर से विमोचन कार्यक्रम हुआ। इसमें साहित्यकार डॉ. बृजेंद्र निगम की दो कृतियों स्वाध्याय रत्न मंजूषाश्श एवं भोले बच्चों की सच्ची कहानियां का विमोचन हुआ। अध्यक्षता लखनऊ विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रो. ओमप्रकाश पांडेय ने की। उन्होंने कहा कि बच्चों के लिए ये कृतियां काफी उपयोगी हैं। मुख्य अतिथि हिंदी विद्वान डॉ. हरिशंकर मिश्र पहुंचे। विशिष्ट अतिथि डॉ. जयंत विनायक वैशम्पायन रहे। वरिष्ठ पत्रकार अतुल चंद्रा, संयोजक राजेंद्र शुक्ल, संस्था के अध्यक्ष अशोक कुमार पांडेय, उपाध्यक्ष राकेश वाजपेयी, डॉ. अमिता दुबे आदि लोग मौजूद रहे।

लोकतंत्र, संविधान और वोट के अधिकार पर संकट, कांग्रेस सड़क से संसद तक लड़ेगी निर्णायक लड़ाई : अविनाश पाण्डेय

लखनऊ, (संवाददाता)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं उत्तर प्रदेश प्रभारी अविनाश पाण्डेय ने प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में आयोजित प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए कहा कि देश आज जिन हालात से गुजर रहा है, वह अत्यंत चिंताजनक हैं। आम जनता महंगाई और बेरोजगारी से जूझ रही है, किसान बदहाल स्थिति में हैं और भाजपा सरकार देश में आपसी सौहार्द को बिगाड़ने का लगातार प्रयास कर रही है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र और संविधान को कमजोर करने का सुनियोजित षड्यंत्र चल रहा है, जिसे कांग्रेस किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देगी।प्रेसवार्ता से पूर्व अविनाश पाण्डेय ने उपस्थित कांग्रेस पदाधिकारियों और पत्रकारों को कांग्रेस स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं। प्रेसवार्ता में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय, पूर्व मंत्री एवं राष्ट्रीय सचिव सह प्रभारी प्रदीप नरवाल, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अजय कुमार लल्लू, अनुसूचित जाति विभाग के चेयरमैन एवं सांसद तनुज पुनिया, सांसद राकेश राठौर, वरिष्ठ नेता अशोक पाण्डेय, मीडिया विभाग के चेयरमैन एवं पूर्व मंत्री डॉ. सी.पी. राय, मीडिया विभाग के वाइस चेयरमैन मनीष हिंदवी, प्रदेश प्रवक्ता अंशू अवस्थी, शहर कांग्रेस अध्यक्ष अमित श्रीवास्तव त्यागी, प्रदेश प्रवक्ता प्रियंका गुप्ता, आस्था तिवारी, अलीमुल्लाह खान, डॉ. सुधा मिश्रा सहित अनेक नेता उपस्थित रहे।प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए अविनाश पाण्डेय ने कहा कि मनरेगा कोई रोजगार योजना नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत का अधिकार है और ग्राम सभा इसकी आत्मा है। भाजपा सरकार ने इस आत्मा को कमजोर कर गांव और गरीब दोनों को नुकसान पहुंचाया है। मनरेगा में कामों का चयन, प्राथमिकता निर्धारण और मजदूरों की निगरानी पहले ग्राम सभा के अधिकार क्षेत्र में थी, लेकिन अब इसे केंद्रीय पोर्टल और मंत्रालयों के नियंत्रण में कर दिया गया है, जिससे ग्राम सभा केवल औपचारिक संस्था

बनकर रह गई है। फंड जारी करने में देरी के कारण मजदूरों को महीनों तक मजदूरी नहीं मिलती और कई राज्यों में काम की मांग के बावजूद काम नहीं दिया जा रहा, जिसका सीधा असर गरीब मजदूरों, किसानों और ग्रामीण परिवारों पर पड़ रहा है।उन्होंने कहा कि एसआईआर के नाम पर हो रही वोट चोरी लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा है। यह कोई साधारण प्रशासनिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि चुनावी व्यवस्था को प्रभावित करने का भाजपा का सुनियोजित प्रयास है। बड़ी संख्या में मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से काटे जा रहे हैं, जिससे आम नागरिकों के संवैधानिक मतदान अधिकार छीने जा रहे हैं। लोकतंत्र की सबसे बड़ी ताकत स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव हैं, लेकिन भाजपा सरकार के संरक्षण में चुनावी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करने की कोशिश की जा रही है।

अखिल भारतीय देववंशी पटवा समाज ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को किया सम्मानित

लखनऊ, (संवाददाता)। अखिल भारतीय देववंशी पटवा समाज के तत्वाधान में रविंद्रालय सभागार में स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री, श्रम एवं सेवायोजन, उत्तर प्रदेश सरकार अनिल राजभर ने दीप प्रज्ज्वलित कर समाज के स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित की।इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री अनिल राजभर ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि पटवा समाज का गौरवशाली इतिहास रहा है। इस समाज ने सनातनी परंपराओं के अनुरूप व्यवसाय किया और अपनी सांस्कृतिक परंपराओं को जीवित रखा। उन्होंने कहा कि यह समाज देवी–देवताओं से जुड़े संस्कारों और हर शुभ कार्य में अपने योगदान के लिए जाना जाता है। साथ ही, पटवा समाज ने देश की आन, बान और शान के लिए भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।मंत्री अनिल राजभर ने कहा कि प्रदेश सरकार पटवा समाज के इस योगदान को सम्मान देने और उसकी पहचान को पूरे देश और विश्व में व्यापक रूप से मान्यता दिलाने के लिए उपयुक्त प्लेटफार्म प्रदान करेगी। उन्होंने यह भी कहा कि समाज के लोगों को शासन प्रशासन में भागीदारी सुनिश्चित कराने और सभी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ पहुँचाने के लिए विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में एक सुव्यवस्थित व्यवस्था लागू की जाएगी।मंत्री ने आगे कहा कि देश का नेतृत्व अब सक्षम हाथों में है, जिससे समाज के सभी वर्गों को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समरसता का अनुभव होगा और प्रत्येक समुदाय का योगदान सम्मान और पहचान प्राप्त करेगा।कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ सदस्य, गणमान्य नागरिक और विभिन्न सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बौद्ध सर्किट को मिल रही वैश्विक पहचान, उत्तर प्रदेश पर्यटन का `बोधि यात्रा' के लिए आमंत्रण : जयवीर सिंह

लखनऊ, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग की दूरदर्शी नीतियों और निरंतर प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। प्रदेश का बौद्ध सर्किट आस्था, विश्वास और वैश्विक पर्यटन का सशक्त केंद्र बनकर उभर रहा है। पर्यटन विभाग की जनवरी से सितंबर 2025 की रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर प्रदेश के बौद्ध स्थलों पर देश–विदेश से आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, कौशांबी, कपिलवस्तु और संकिसा जैसे प्रमुख बौद्ध स्थल न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यटकों को आकर्षित कर रहे हैं, जिससे प्रदेश को वैश्विक बौद्ध पर्यटन मानचित्र पर नई पहचान मिल रही है।पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश में बौद्ध पर्यटन को लेकर विश्व स्तर पर लगातार बढ़ती रुचि देखने को मिल रही है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2025 के नौ महीनों, यानी जनवरी से सितंबर के बीच, भगवान बुद्ध से जुड़े प्रदेश के छह प्रमुख स्थलों पर कुल 61,15,850 पर्यटकों ने दर्शन किए। इनमें 58,44,591 घरेलू पर्यटक और 2,71,259 विदेशी पर्यटक शामिल हैं। ये आंकड़े प्रदेश की बौद्ध विरासत की अंतरराष्ट्रीय स्वीकार्यता और पर्यटन सुविधाओं के सुदृढ़ीकरण को दर्शाते हैं। पर्यटन विभाग का अनुमान है कि वर्ष 2025 के अंत तक इन पवित्र स्थलों पर आने वाले पर्यटकों की संख्या 64 लाख से अधिक हो सकती है। ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण कौशांबी जिला बौद्ध पर्यटन में विशेष स्थान रखता है। इसका संबंध प्राचीन कौशांबी सभ्यता से है, जिसका उल्लेख रामायण और महाभारत में मिलता है। बौद्ध परंपरा के अनुसार भगवान बुद्ध ने कौशांबी में अपना छठा और नौवां वर्षावास व्यतीत किया था। वर्ष 2025 के जनवरी से सितंबर के बीच कौशांबी में कुल 23,19,237 पर्यटकों का आगमन दर्ज किया गया, जिनमें 2,884 विदेशी पर्यटक शामिल रहे। यह आंकड़ा राज्य के पर्यटन विकास में कौशांबी की अहम भूमिका को रेखांकित करता है।प्रदेश के अन्य बौद्ध स्थलों पर भी पर्यटकों की उल्लेखनीय उपस्थिति दर्ज की गई है। कपिलवस्तु में इस अवधि के दौरान कुल 51,795 पर्यटक पहुंचे, जिनमें 15,423 विदेशी सैलानी शामिल रहे। महापरिनिर्वाण स्थली कुशीनगर में सर्वाधिक 18,60,507 पर्यटकों का आगमन हुआ, जिनमें 1,88,131 विदेशी पर्यटक थे। भगवान बुद्ध द्वारा प्रथम उपदेश दिए गए पावन स्थल सारनाथ में 17,75,489 पर्यटक पहुंचे, जिनमें 64,821 विदेशी आगंतुक शामिल रहे। इसी तरह श्रावस्ती में 79,245 और संकिसा में 29,577 पर्यटकों का आगमन दर्ज किया गया। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि उत्तर प्रदेश वैश्विक बौद्ध पर्यटन मानचित्र पर लगातार सशक्त रूप से उभर रहा है।जयवीर सिंह ने बताया कि प्रदेश के बौद्ध स्थल न केवल भारत, बल्कि विश्वभर के बौद्ध श्रद्धालुओं और पर्यटकों के लिए आस्था और आकर्षण का केंद्र बन चुके हैं। उन्होंने कहा कि वर्ष 2023 में इन स्थलों पर कुल 47,04,317 पर्यटकों ने भ्रमण किया था, जिनमें 2,54,688 विदेशी सैलानी शामिल थे। वर्ष 2024 में यह संख्या बढ़कर 61,47,826 तक पहुंच गई, जिसमें 3,53,461 विदेशी पर्यटक शामिल रहे। यह निरंतर बढ़ोतरी प्रदेश के बौद्ध पर्यटन को वैश्विक पहचान दिलाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण संकेत है।प्रमुख सचिव पर्यटन अमृत अभिजात ने बताया कि उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग पैसिफिक एशिया ट्रैवल एसोसिएशन, जापान टूरिज्म एक्सपो, आईएफटीएम टॉप रेसा और वर्ल्ड ट्रैवल मार्केट लंदन जैसे प्रमुख अंतरराष्ट्रीय मंचों पर राज्य के बौद्ध सर्किट और भगवान बुद्ध से जुड़े पवित्र स्थलों का प्रभावी प्रचार कर रहा है। इसके साथ ही थाईलैंड, वियतनाम, मलेशिया, श्रीलंका, भूटान, जापान, लाओ पीडीआर, कंबोडिया, सिंगापुर और इंडोनेशिया जैसे बौद्ध बहुल देशों के टूर ऑपरेटरों, भिक्षुओं और मीडिया प्रतिनिधियों के लिए विशेष फैम ट्रिप का आयोजन भी किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि पर्यटन विभाग की 'बोधि यात्रा' पहल ने उत्तर प्रदेश की वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर उपस्थिति को और अधिक सुदृढ़ किया है।

कश्मीर से कन्याकुमारी, भारत माता एक हमारी' का गूंजा स्वरू जौनपुर में अभाविप की शोभायात्रा बनी राष्ट्रीय एकता का प्रतीक

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपु। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, काशी का 65वाँ प्रांत अधिवेशन 29 से 31 दिसंबर के मध्य जौनपुर स्थित वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय में अस्थायी रूप से बसाए गए 'रानी अब्बक्का नगर' में जारी है। मंगलवार को द्वितीय दिवस पर "परिसर का बदलता स्वरूप एवं हमारी भूमिका" विषयक भाषण सत्र आयोजित हुआ, जिसमें अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने अपना मार्गदर्शक वक्तव्य दिया। समानांतर सत्रों में भी इस विषय पर कार्यकर्ताओं एवं छात्र नेताओं द्वारा गहन विमर्श किया गया। भाषण सत्र के उपरांत मोहम्मद हसन पी.जी. कॉलेज से टी.डी. कॉलेज तक नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए लगभग 4 किलोमीटर लंबी भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जिसका जौनपुर के नागरिकों द्वारा सभी प्रमुख चौराहों पर पुष्पवर्षा एवं उत्साहपूर्ण जयघोष के साथ स्वागत किया गया। अभाविप, काशी का प्रांतीय अधिवेशन 29 दिसंबर से प्रारंभ हुआ, जिसमें प्रांत के 18 सांगठनिक जिलों से लगभग 850 कार्यकर्ताओं ने सहभागिता की। मंगलवार शाम भव्य शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में "अलग भाषा–अलग वेश, फिर भी अपना एक देश" की भावना सजीव रूप में परिलक्षित हुई। काशी प्रांत के विभिन्न परिसरों से आए विद्यार्थियों ने अपने–अपने पारंपरिक वेश, लोकनृत्य, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों एवं झांकियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की विविधता और एकता का दिव्य दर्शन कराया। यात्रा के दौरान पूरा नगर "भारत माता की जय" एवं "कश्मीर से कन्याकुमारी, भारत माता एक हमारी" जैसे ओजस्वी नारों से गुंजायमान रहा। यह शोभायात्रा कोतवाली चौराहा, किला रोड, कीर्तिकुंज, ओलंदगंज, जेसिस चौराहा सहित प्रमुख मार्गों से होते हुए टी.डी. कॉलेज में संपन्न हुई। शोभायात्रा के पश्चात टी.डी. कॉलेज ग्राउंड में खुला अधिवेशन आयोजित किया गया, जिसमें अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री अभय प्रताप सिंह के नेतृत्व में विभिन्न जिलों एवं शैक्षणिक परिसरों से आए छात्र नेताओं ने शिक्षा, बांग्लादेशी घुसपैठ, समाज, युवाशक्ति एवं 'ऑपरेशन सिंदूर' जैसे विषयों पर अपना प्रेरक उद्बोधन दिया। इस अवसर पर अभाविप, काशी के प्रांत अध्यक्ष डॉ. महेंद्र त्रिपाठी तथा प्रांत मंत्री शिवम सिंह ने भी प्रतिनिधियों को संबोधित किया। विभिन्न वक्ताओं में राष्ट्रीय मंत्री अभय प्रताप सिंह ने शैक्षणिक परिसरों की चुनौतियों, प्रांत मंत्री श्री शिवम सिंह ने बांग्लादेशी घुसपैठ के राष्ट्रीय प्रभाव, प्रियांशु वर्मा ने 'आज का युवा, कल का राष्ट्र–निर्माता', शिवबाबू चौधरी ने खाद्य पदार्थों में मिलावट की रोकथाम, आर. चित्रा ने 'सशक्त नारी, समृद्ध भारत' तथा शुभश्री रणजीत ने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर अपना प्रभावी वक्तव्य दिया। अंत में प्रांत अध्यक्ष डॉ. महेंद्र त्रिपाठी द्वारा आभार ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

शालीमार एवारा प्लॉटेड प्रोजेक्ट पूरी तरह सोल्ड आउट, लॉन्च के कुछ ही समय में प्राप्त की यह उपलब्धि

सिटी रिपोर्टर प्रत्यूष पाण्डेय

लखनऊरू लखनऊ के रियल एस्टेट बाजार में शालीमार ग्रुप के प्लॉटेड प्रोजेक्ट शालीमार एवारा ने एक नई मिसाल कायम की है। प्रोजेक्ट लॉन्च के कुछ ही समय के भीतर शालीमार एवारा के सभी प्लॉट पूरी तरह बिक गए हैं। यह उपलब्धि न सिर्फ खरीदारों के भरोसे को दिखाती है, बल्कि यह भी बताती है कि सही लोकेशन, सही कीमत और भरोसेमंद ब्रांड मिलकर किस तरह जबरदस्त मांग पैदा कर सकते हैं। शालीमार एवारा को ग्राहकों से जो मजबूत प्रतिक्रिया मिली, उसके पीछे सबसे बड़ा कारण इसकी प्राइम लोकेशन रही। शहर से बेहतर कनेक्टिविटी, तेजी से विकसित हो रहा इंफ्रास्ट्रक्चर और भविष्य की संभावनाओं ने इसे निवेशकों और घर बनाने की योजना रखने वालों दोनों के लिए आकर्षक बनाया। इसके साथ ही प्लॉट्स की कीमतें बाजार के हिसाब से संतुलित रखी गईं,

जिससे अलग–अलग वर्ग के खरीदारों को इसमें अवसर नजर आया। ग्राहकों के फैसले में शालीमार ग्रुप का नाम भी एक अहम वजह बना। वर्षों से भरोसे, गुणवत्ता और समय पर डिलीवरी के लिए पहचाना जाने वाला शालीमार ब्रांड, शालीमार एवारा में निवेश करने वालों के लिए आत्मविश्वास का आधार रहा है। इसी भरोसे ने कई खरीदारों को शुरुआती चरण में ही बुकिंग के लिए प्रेरित किया। शालीमार एवारा में छोटे परिवारों से लेकर बड़े प्लॉट की तलाश करने वाले ग्राहकों तक, सभी की जरूरतों को ध्यान में रखा जा सका। यही विविधता भी तेज बिक्री का एक बड़ा कारण बनी।

चाइनीज मांझे से एक और व्यक्ति घायल,नाक कटी, जिलाधिकारी को ज्ञापन के बावजूद कार्रवाई नहीं

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में चाइनीज मांझे का कहर जारी है। सिकरारा क्षेत्र में चाइनीज मांझे की चपेट में आने से एक व्यक्ति की नाक कट गई। यह घटना ऐसे समय हुई है जब कुछ दिन पहले ही चाइनीज मांझे से एक प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक की मौत हो गई थी। जिला प्रशासन द्वारा प्रतिबंध के बावजूद इस पर कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं हो रही है। मंगलवार को सिकरारा के अहिरौली गांव निवासी घनश्याम विश्वकर्मा बरईपार से अपना काम निपटाकर घर लौट रहे थे। चौराहे से कुछ मीटर की दूरी पर ही वे चाइनीज मांझे की चपेट में आ गए। मांझा उनकी नाक पर लगा, जिससे उन्हें गंभीर चोट आई। घटना के बाद घनश्याम को तुरंत एक स्थानीय चिकित्सक के पास ले जाया गया। उनकी नाक पर पांच टांके लगाए गए, जिसके बाद रक्तस्राव रुका। इस घटना से क्षेत्र में दहशत का माहौल है। जिले में चाइनीज मांझे से आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। इससे पहले, कुछ दिनों पूर्व एक प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक की चाइनीज मांझे से गला कटने के कारण मौत हो गई थी। कई समाजसेवी संगठनों ने जिलाधिकारी को चाइनीज मांझे की बिक्री और उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए ज्ञापन भी दिए हैं, लेकिन अभी तक इस संबंध में कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है।

नशीली दवाओं की अवैध बिक्री पर सख्ती, दोहरी बिक्री पर होगी कड़ी कार्रवाई : जिलाधिकारी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर जनपद में नशीली दवाओं एवं मादक पदार्थों की अवैध बिक्री पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में एन–कार्ड (एनसीओआरडी) समिति की बैठक सोमवार देर शाम आयोजित की गई। बैठक में जिलाधिकारी ने स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा कि नशे के कारोबार में किसी भी प्रकार की लापरवाही अथवा नियमों के उल्लंघन को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। जिलाधिकारी ने नशीली दवाओं की दोहरी बिक्री (डबल सेल) पर विशेष रूप से नाराजगी व्यक्त करते हुए निर्देश दिया कि ऐसे मामलों में कड़ाई से जांच कर दोषियों के विरुद्ध विधिक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि नियमों का उल्लंघन करने वालों को दंडित किया जाना आवश्यक है, ताकि अवैध गतिविधियों पर प्रभावी अंकुश लगाया जा सके। बैठक में जिलाधिकारी ने विद्यालयों एवं अन्य शिक्षण संस्थानों के आसपास स्थित मेडिकल स्टोर और दुकानों का नियमित निरीक्षण कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि यह सुनिश्चित किया जाए कि स्कूल–कॉलेजों के समीप किसी भी प्रकार की नशीली दवाओं अथवा प्रतिबंधित मादक पदार्थों की बिक्री न हो। इसके लिए औषधि निरीक्षक, पुलिस विभाग एवं अन्य संबंधित अधिकारियों को संयुक्त अभियान चलाने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी ने कहा कि युवाओं और छात्रों को नशे की गिरफ्त से बचाने के लिए सतर्कता, सख्त प्रवर्तन और व्यापक जनजागरूकताकृइन तीनों बिंदुओं पर समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को आपसी समन्वय के साथ निरंतर कार्रवाई करने का निर्देश दिया। बैठक में पुलिस विभाग, औषधि प्रशासन सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

संक्षिप्त खबरें

जिला सलाहकार समिति एवं बैंकर्स समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर जिलाधिकारी डॉ. दिनेश चंद्र की अध्यक्षता में जिला सलाहकार समिति एवं बैंकर्स समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। इस दौरान जिलाधिकारी के द्वारा नाबार्ड के पोटेंशियल लिंकेज क्रेडिट प्लान बुकलेट का विमोचन भी किया गया। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास योजना की बैंकवार समीक्षा करते हुए निर्देशित किया गया कि आवेदन लंबित नहीं रहने चाहिए, डिस्बर्समेंट की प्रक्रिया को शीघ्र पूर्ण करें जिससे अधिक से अधिक युवाओ अपना उद्यम स्थापित कर सके। पीएम सूर्यघर योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए निर्देश दिया गया कि शासन की प्राथमिकता है कि अधिक से अधिक संख्या में इस योजना से लोगो को लाभान्वित किया जाए। इस योजना में और प्रयास की जरूरत है। पीएम स्वनिधि योजना की समीक्षा के दौरान उन्होंने निर्देश दिया कि स्ट्रीट वेंडरों को ऋण वितरित किया जाए। बैठक में जिलाधिकारी द्वारा बैंक एवं सरकार प्रायोजित योजनाओं की बिंदुवार समीक्षा की गई। ऋण–जमा अनुपात पर विस्तृत चर्चा की गई तथा इसमें वृद्धि लाने के प्रयासों पर जोर दिया गया। विशेष रूप से यूनियन बैंक एवं स्टेट बैंक को ऋण–जमा अनुपात में सुधार लाने हेतु आवश्यक निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी द्वारा जनपद में कार्यरत सभी बैंकों की शाखाओं एवं बैंक एटीएम की समीक्षा करते हुए बैंक मित्रों के कार्यों की भी समीक्षा की गई। साथ ही वित्तीय समावेशन सुदृढ़ीकरण अभियान को प्रभावी ढंग से संचालित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में स्वयं सहायता समूह, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, एक जनपद–एक उत्पाद योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम, एनआरएलएम, फसल बीमा योजना, पीएम सूर्य घर योजना सहित समस्त सरकार प्रायोजित योजनाओं में वित्तीय वर्ष 2025–26 के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु बैंक एवं विभागीय समन्वय से कार्य करने के निर्देश दिए गए। जिलाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया कि जनपद में कृषि ऋण वितरण एवं मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान, फसल बीमा योजना के अंतर्गत बैंकध्शाखा प्रबंधक ऋण उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग करें, जिससे समयबद्ध रूप से लक्ष्य की प्राप्ति सुनिश्चित की जा सके।

अनुश्रवण समिति की बैठक में उठा अवैध कट का मुद्दा

भदोही, (संवाददाता)। जिला स्तरीय विकास कार्य अनुश्रवण समिति की बैठक सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में औराई विधायक दीनानाथ भाष्कर की अध्यक्षता में हुई। इसमें हाईवे के अवैध कट बंद होने का मुद्दा छाया रहा। प्रधानमंत्री आवास, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, मनरेगा समेत अन्य कार्यों की प्रगति जानी गई। जनप्रतिनिधियों ने विकसित भारत जी राम जी के पोस्टर का विमोचन किया। विधायक ने आठ अगस्त 2025 को हुई बैठक में लिए गए निर्णयों की जानकारी ली। इस दौरान नेशनल हाईवे पर कट बंद होने से पेट्रोल पंप संचालकों की बिक्री और जिले के राजस्व कम होने के प्रकरण एवं राईस मिलरों की शिकायतों को गंभीरता से लेते हुए निस्तारण के निर्देश दिए। कहा कि प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री आवास में पात्रों का ही चयन करें।

मुंह में लौंग, सुपारी दबाकर सोने की आदत बन सकती है जानलेवा

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। मुंह में सुपारी, लौंग या कोई और चीज रखकर सो जाना कई लोगों की आदत होती है लेकिन यह आदत बेहद खतरनाक साबित हो सकती है। नींद के दौरान कई बार इस तरह की चीजें सांस की नली के रास्ते फेफड़ों में पहुंच सकती हैं और लंबे समय तक बार–बार होने वाले संक्रमण का कारण बन सकती हैं। हाल ही में अपोलो हॉस्पिटल में कुछ ऐसा ही केस देखने को मिल जहां करीब 70 साल की एक बुजुर्ग महिला को बार–बार छाती में संक्रमण और निमोनिया की शिकायत के साथ अस्पताल में आई। हालत ज्यादा खराब होने की वजह से उसे आई सी यू में भर्ती कराना पड़ा। इस दौरान एक्स–रे और सीटी स्कैन की जांच में उनके फेफड़ों में निमोनिया पाया गया। मरीज को पहले से हृदय संबंधी समस्या, हाई ब्लड प्रेशर था और वह ब्लड थिनर (खून पतला करने की दवाएं) भी ले रही थीं। बीमारी के कारण को समझने के लिए डॉक्टरों ने ब्रोंकोस्कोपी करने का निर्णय लिया। अपोलो हॉस्पिटल के पल्मोनोलॉजिस्ट डॉ शुभम अग्रवाल ने बताया कि ब्रोंकोस्कोपी के दौरान यह देखा गया कि जिस हिस्से में निमोनिया था, वहां फेफड़े के अंदर कोई वस्तु फंसी हुई है। डॉक्टरों ने परिजनों को बताया कि उस वस्तु को निकालना बेहद जरूरी है और इसके लिए जनरल एनेस्थीसिया और वेंटिलेटर की जरूरत पड़ेगी। प्रक्रिया लंबी होने के कारण परिवार पहले घबरा गया लेकिन बातचीत और समझाने के बाद उन्होंने सहमति दी। इसके बाद मरीज को पूरी तरह बेहोश कर फेफड़ों के अंदर कैमरे और विशेष उपकरण की मदद से वह वस्तु बाहर निकाली गई। प्रक्रिया के दौरान हल्की ब्लीडिंग हुई, जिसे दवाओं से नियंत्रित कर लिया गया। जब वह वस्तु बाहर निकाली गई, तो वह सुपारी का एक टुकड़ा था। परिवार ने बताया कि मरीज को सुपारी चबाने की आदत थी और वह कई बार रात में भी मुंह में सुपारी रखकर सो जाती थीं। यही सुपारी का टुकड़ा उनके फेफड़ों में फंसा हुआ था और उसी की वजह से उन्हें लंबे समय से बार–बार संक्रमण हो रहा था। सुपारी का टुकड़ा निकालने के बाद मरीज की हालत तेजी से सुधरी, उन्हें वेंटिलेटर से हटा दिया गया और कुछ ही समय में वह स्वस्थ होकर घर लौट गईं। डॉ शुभम ने कहा कि जब कोई बाहरी चीज सांस के रास्ते फेफड़ों में फंस जाती है, तो उसके आगे का पूरा हिस्सा संक्रमित हो जाता है और वहां मवाद बन सकता है। कई बार व्यक्ति के गहरी नींद में होने पर सांस की नली से फेफड़े में जाकर फंसी चीजों का पता भी बस हल्की खांसी से नहीं चल पाता है। खांसी की दवा या नेब्यूलाइजर के इस्तेमाल से कई बार ये लक्षण भी धीमे पड़ जाते हैं और एक्स रे से पता भी नहीं चल पाता कि फेफड़े में कुछ फंसा है। ऐसे में बहुत सावधानी बरतने की जरूरत होती है। डॉक्टर शुभम ने कहा कि अगर कोई भी व्यक्ति मुंह में सुपारी, लौंग या कोई भी चीज रखकर सोता है तो यह बेहद खतरनाक है, ये आदत जान के लिए खघ्तरा हो सकती है। इसके अलावा अगर किसी वयस्क को बार–बार छाती का संक्रमण या निमोनिया हो रहा है, तो यह भी देखना जरूरी है कि कहीं कोई बाहरी वस्तु फेफड़ों में तो नहीं फंसी है। नींद में ऐसी स्थिति होने पर व्यक्ति को खांसी के जरिए भी इसका साफ संकेत नहीं मिल पाता, जिससे असली कारण लंबे समय तक छुपा रह जाता है। डॉ. मयंक सोमानी, एमडी और सीईओ, अपोलमेडिक्स सुपरस्पेशलिटी हॉस्पिटल ने कहा कि यह केस बताता है कि रोजमर्रा की छोटी और लापरवाही भरी आदतें जैसे रात में कुछ चबाते हुए सोना गंभीर बीमारी का कारण बन सकती हैं। फेफड़ों में फंसी बाहरी वस्तु लंबे समय तक बिना साफ लक्षण के संक्रमण फैलाती रहती है और इलाज केवल दवाओं तक सीमित रह जाता है। समय पर सही जांच और इलाज से न सिर्फ बीमारी की असली वजह भी सामने आई, बल्कि मरीज की जान बची। इसलिए बार–बार होने वाली खांसी या संक्रमण के पीछे छिपे कारणों की गहराई से जांच जरूरी है।

एक ही सर्दी...किसी के लिए मौसम सुहाना तो किसी के लिए सितम

गोरखपुर, (संवाददाता)। कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। इसका जनजीवन पर साफ असर दिखाई दे रहा है। ठंड का यह मौसम शहर में दो अलग–अलग तस्वीरें पेश कर रहा है। एक ओर वे लोग हैं जो सर्दी का आनंद ले रहे हैं, घूम–फिर रहे हैं और खरीदारी में व्यस्त हैं। वहीं दूसरी ओर वे लोग हैं जिनके लिए यही ठंड रोजमर्रा की जद्दोजहद को और कठिन बना रही है। ठंड बढ़ते ही शहर के बाजारों में रौनक लौट आई है। गर्म कपड़ों की दुकानों पर ग्राहकों की भीड़ देखी जा रही है। स्वेटर, जैकेट, शॉल और ऊनी टोपी की खरीदारी जोरों पर है। सोमवार को गोलघर, मोहद्दीपुर और अन्य प्रमुख बाजारों में खासा चहल–पहल नजर आई। दुकानदारों के लिए यह मौसम कारोबार का सुनहरा समय साबित हो रहा है। एक वर्ग के लोग परिवार के साथ बाजार पहुंच रहे हैं और सर्दी को त्योहारों से पहले की शॉपिंग का मौका मान रहे हैं। सोमवार को नौका विहार पर भी ठंड के बावजूद लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। ताल के किनारे टहलते परिवार, दोस्तों के साथ समय बिताते युवा और गर्म चाय–कॉफी का आनंद लेते लोग दिखाई दिए। कई लोग इस मौसम को घूमने–फिरने और रोजमर्रा की व्यस्तता से राहत पाने का जरिया मान रहे हैं। गोरखनाथ मंदिर में भी सोमवार को बड़ी संख्या में श्रद्धालु और पर्यटक पहुंचे। ठंड के बीच दर्शन और परिसर में घूमने का अलग ही उत्साह देखने को मिला। यही सर्दी शहर के कमजोर और मेहनतकश वर्ग के लिए परेशानी बनकर सामने आई है। सोमवार को साहबगंज मंडी में ठेले पर सामान ढोते मजदूरों की हालत ठंड की मार को बयां कर रही थी। किसी के पास ढंग की जैकेट नहीं तो किसी के पैरों में जूते तक नहीं थे। ठंडी हवा और सर्द जमीन के बीच ये मजदूर अपनी आजीविका के लिए लगातार मेहनत कर रहे थे। हार्बर्ट बंधे पर नाला और सड़क निर्माण में लगे मजदूरों के लिए भी सर्द मौसम किसी चुनौती से कम नहीं है। खुले आसमान के नीचे सुबह से शाम तक काम कर वह परिवार चला रहे हैं। इन मजदूरों के साथ छोटे–छोटे बच्चे भी गिट्टी और निर्माण सामग्री उठाते नजर आए। ठंड के इस मौसम में जहां कई बच्चे घरों में गर्म कपड़ों में सुरक्षित हैं, वहीं ये बच्चे मेहनत और ठंड दोनों से जूझ रहे थे। ठंड को देखते हुए डीएम दीपक मीणा ने रविवार को स्कूल बंद करने का आदेश जारी कर दिया।

संक्षिप्त खबरें

पांच ट्रेनें रहीं निरस्त, चार से पांच घंटे तक विलंब से चल रहीं ट्रेनें

भदोही, (संवाददाता)। ठंड के कारण रेल यातायात व्यवस्था बेपटरी हो गई है। सोमवार को भदोही–जंघई रेलमार्ग की पांच ट्रेनें निरस्त रहीं। वहीं, छह से ज्यादा ट्रेनें विलंब से आईं। सोमवार को 13005 हावड़ा–अमृतसर पंजाब मेल, अप–डाऊन सारनाथ एक्सप्रेस व अप–डाऊन जनता एक्सप्रेस निरस्त रही। मंगलवार को बनारस–नई दिल्ली के बीच चलने वाली 15127 केवी एक्सप्रेस निरस्त रहेगी। भदोही स्टेशन अधीक्षक बीबी मिश्रा ने बताया कि सोमवार को छह ट्रेनें निर्धारित समय से लगभग 4 घंटे तक विलंब से चलीं। लेट चलने वाली ट्रेनों में 12875 पुरी–आनंद विहार नीलांचल एक्सप्रेस 3:50 घंटे, 12256 जम्मूतवी–पटना अर्चना एक्सप्रेस 3रू 35 घंटे, 11071 एलटीटी–बलिया कामायनी एक्सप्रेस तीन घंटे, 15128 नई दिल्ली–बनारस केवी एक्सप्रेस लगभग 2.45 घंटे, 15127 बनारस–नई दिल्ली केवी एक्सप्रेस और 13006 अमृतसर–हावड़ा पंजाब मेल एक्सप्रेस लगभग सवा घंटे विलंब से भदोही स्टेशन पर पहुंची।

महेंद्र बिंद भदोही तहसील बार के अध्यक्ष, विनोद संयुक्त सचिव निर्वाचित

भदोही, (संवाददाता)। भदोही तहसील बार एसोसिएशन का वार्षिक चुनाव सोमवार को कड़ी सुरक्षा के बीच हुआ। शाम पांच बजे मतगणना के बाद विजेताओं के नाम की घोषणा की गई। अध्यक्ष पद पर महेंद्र कुमार बिंद और संयुक्त सचिव पर विनोद कुमार चौरसिया निर्वाचित हुए। उपाध्यक्ष समेत अन्य पदों पर एक प्रत्याशी होने से निर्विरोध हो गए। भदोही तहसील बार एसोसिएशन के चुनाव में अध्यक्ष और संयुक्त सचिव पद पर दो–दो प्रत्याशी होने से चुनाव हुआ। सोमवार को सुबह नौ बजे भदोही तहसील परिसर में बने दो बूथों पर सुरक्षा के बीच मतदान शुरू हुआ। निर्धारित समय दोपहर तीन बजकर 30 मिनट तक 324 में 308 अधिवक्ताओं ने मतदान किया। चार बजे के बाद मतगणना शुरू हुई। इसमें महेंद्र कुमार बिंद अध्यक्ष पद निर्वाचित हुए। महेंद्र को कुल 164 प्राप्त हुए, जबकि उनके प्रतिद्वंदी प्रसन्न कुमार मिश्रा को 142 मत मिले। 22 मत से उन्होंने करीबी को हराया।

50 लाख रुपये से 11 वार्डों में बनेंगी सात सीसी रोड और आठ इंटरलॉकिंग

भदोही, (संवाददाता)। नगर पंचायत ज्ञानपुर के 11 वार्डों में करीब 50 लाख से सीसी रोड व इंटरलॉकिंग के काम होंगे। 15वें वित्त के नगर पंचायत को 50 लाख रुपये की धनराशि मिलेगी। केंद्र और राज्य सरकार से 25–25 लाख रुपये दिया जाएगा। एक सप्ताह पहले 25 लाख रुपये की पहली किश्त जारी कर दी गई है। इससे नगर के 11 वार्डों में सात सीसी रोड, आठ इंटरलॉकिंग सड़क सहित विभिन्न कार्य कराएं जाएंगे। 100 स्ट्रीट लाइट क्रय किया जाएगा। लाइट को नगर के सभी वार्डों में लगाया जाएगा। इससे प्रकाश व्यवस्था दुरूस्त होगी, जो बजट बचेगा। उसके पैसे से टूटी नाली, खुले मेन होल के ढ़क्कन को दुरुस्त कराया जाएगा। वर्तमान में नगर में कुल 550 पोल हैं। इस पर स्ट्रीट लाइट लगाई गई है। कई पोल पर लाइट फ्यूज है। इसे बदलवाया जाएगा।

अप्रेंटिसशिप के लिए 25 युवा चयनित

उन्नाव, (संवाददाता)। रोजगार मेले में 25 आईटीआई पास युवाओं को अप्रेंटिसशिप के लिए चयनित किया गया। अभिलेख की जांच के बाद उन्हें तैनात किया जाएगा। जगन्नाथगंज स्थित राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में सोमवार को अप्रेंटिसशिप रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इसमें 27 युवाओं ने साक्षात्कार के लिए पंजीकरण कराया। टाटा मोटर्स के प्रतिनिधि ने आईटीआई पास युवाओं का साक्षात्कार किया। इसके बाद 25 को अप्रेंटिसशिप के लिए चयनित किया। प्लेसमेंट इंचार्ज गौरी ने बताया कि चयनित युवाओं के पहले अभिलेखों की जांच की जाएगी। इसके बाद तैनात किया जाएगा। रग्घाखेड़ा के नितिन ने बताया कि उन्होंने साक्षात्कार दिया है। कंपनी के एचआर ने अभी चयन की जानकारी नहीं दी है। दीप तिवारी ने बताया कि कंपनी और काम के विषय में जानकारी भी दी गई। अभिलेख सत्यापन के बाद तैनाती स्थल पर भेजा जाएगा।

यूनाइटेड एफसी और खेल वीर ने जीता लीग मैच

उन्नाव, (संवाददाता)। खेल विभाग की ओर से आयोजित फुटबॉल प्रतियोगिता में यूनाइटेड एफसी और खेलवीर टीम ने लीग मैच जीत लिए हैं। पहले दिन चार लीग मैच खेल गए। पीडी नगर स्थित सेंट लॉरेंस स्कूल में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के तहत फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का शुभारंभ जिला क्रीड़ा अधिकारी मुकेश सब्बरवाल और वरिष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी पवन मिश्रा ने किया। इसके बाद उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया। प्रतियोगिता में कुल आठ टीमों ने भाग लिया। पहला मैच अल्फा स्ट्राइकर और सेवन स्टार के बीच खेला गया। इसमें दोनों टीमों ने 01 – 01 गोल किया। इससे मैच ड्रा हो गया। वहीं दूसरा मैच यूनाइटेड एफसी और फाइव स्टार क्लब के बीच खेला गया। इसमें 3– 1 से यूनाइटेड एफसी ने जीत हासिल की। तीसरा मैच खेलवीर और सेवन स्टार टीम के बीच खेला गया। इसमें 05 – 01 खेलवीर क्लब के ने जीत हासिल की। इस दौरान अभिषेक गुप्ता, अंशुमान त्रिवेदी, अभिषेक निगम, डॉ अश्वनी कुमार शुक्ल, डॉ राजेश सिंह, प्रीती गुप्ता व अन्य मौजूद रहे।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक

श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 – 7007415808, 9415034002

Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।